मुस्कुराते चेहरे : मचलते झरने

(कश्मीर घाटी और नैनीताल का मनमोहक यात्रा-वर्णन)

लेखक

दयाल शरण 'आग्नेय'

दिल्ली पुस्तक सदन

गोविन्द मित्र रोड
पटना—४

१६, यू०बी० बंगलो रोड
दिल्ली—६

प्रकाशक :
श्रीमती मनोरमा केशव
साहित्य गोष्ठी
११३, श्रीकृष्ण नगर
पटना—१

प्रथम संस्करण :
१९६२

मूल्य :
रु० [illegible]

मुद्रक
जयदुर्गा प्रेस
नयाटोला
पटना – ४

देश के लोकप्रिय नेता

तथा

कश्मीरी जनता के प्राण

श्रीमान बख्शी गुलाम मोहम्मद साहब

एवं

कश्मीर के जिंदादिल बाशिन्दों को

सादर-सप्रेम

भेंट

दो बातें

प्रिय पाठको

यों तो हिन्दी साहित्य में यात्रा-संस्मरणों की कमी है, परंतु कश्मीर के संबंध में किसी ऐसी पुस्तक का न होना मुझे बहुत खटका और उसी प्रेरणा के फलस्वरूप इस पुस्तक की रचना हुई है। जब से हमारा देश स्वतंत्र हुआ है, भ्रमण के प्रति मध्यम वर्ग के नागरिकों में भी बहुत रुचि पैदा हो गई है। जो कि राष्ट्रीय संगठन के दृष्टिकोण से बहुत ही आवश्यक है। देश के सभी भ्रमण योग्य स्थानों में कश्मीर-घाटी का स्थान सबसे ऊँचा है इसलिये इस "संसार का स्वर्ग" के बारे में लोगों के हृदय में अधिकाधिक रुचि पैदा होना स्वाभाविक ही है। प्रतिवर्ष कश्मीर जाने वालों की संख्या में अतिशय वृद्धि इस बात का सबूत है। मगर मेरे विचार से जो लोग कश्मीर भ्रमण करना चाहते हैं या वहाँ के बारे में केवल जानकारी ही प्राप्त करना चाहते हैं, सभी के लिये यह पुस्तक लाभदायक सिद्ध होगी।

पाकिस्तानी कबाइलियों के बर्बर हमलों की वजह से यहाँ की निर्दोष जनता को अकथनीय दुख सहने पड़े, मगर यहाँ के मेहनतकश, साहसी और जिंदादिल लोग श्रीमान बख्शी गुलाम मोहम्मद साहब की सफल रहनुमाई में किस बहादुरी से इन सभी कठिनाइयों को झेलने के बावजूद भी खुशहाली के रास्ते पर आगे बढ़ रहे हैं, यह इतिहास (तवारीख) की

एक अनोखी घटना है। आज केवल कश्मीर ही नहीं वरन् सारा वतन इनके बड़प्पन के गुणगान कर रहा है। और यह सच है कि इनकी रहनुमाई में यहाँ के लोग दिन दूनी, रात चौगुनी उन्नति कर रहे हैं, जिसका सबूत यहाँ की जिंदगी के हर कदम पर देखने को मिलता है।

कश्मीर के बारे में जितना भी लिखा जाय, थोड़ा ही होगा। यहाँ का सौंदर्य तो केवल देखकर ही अनुभव किया जा सकता है। फिर भी मेरा यह तुच्छ प्रयास पाठकों के कुछ भी काम आ सके इतने ही से मैं अपने परिश्रम को धन्य मानूँगा। साथ में नैनीताल की भी एक झलक दे दी गई है, जिससे पाठकों को लाभ ही होगा।

सविनय

दयाल शरण "आग्नेय"

पटना

बुधवार, ता० १६-६-६२ ई०

प्रकाशक की ओर से

'साहित्य गोष्ठी' के तत्वावधान में प्रकाशित श्री दयाल शरण 'आग्नेय' का यात्रा-वर्णन 'मुस्कुराते चेहरे : मचलते झरने' आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें अपार हर्ष हो रहा है। साहित्य-गोष्ठी रोज-ब-रोज साथ-साथ उठने-बैठने वाले मित्रों की एक सहयोगी संस्था है। दिल्ली पुस्तक सदन, दिल्ली-पटना, ने संस्था के प्रकाशनों के विक्रय का भार अपने ऊपर ले लिया है, जिसके लिए वे संस्था की ओर से धन्यवाद के पात्र हैं।

आशा है, भविष्य में हम पाठकों की ऐसी ही सेवा करते रहेंगे।

—प्रकाशक

विषय-सूची

★

१. देहली से पठानकोट तक

नई देहली का स्टेशन, चारों ओर तड़क भड़क का साम्राज्य। सभी अपनी धुन में मस्त तथा दूसरों के दुख दर्द से गाफिल। कहीं मोटर, कहीं टैक्सी, कहीं टाँगा तो कहीं स्कूटरों की भरमार। मैं भी अपने स्कूटर से उतर पड़ा।

चारों ओर देखा तो कुली नदारद। रात्रि के ८-३० हो चुके थे। उधर श्रीनगर एक्सप्रेस पौने नौ में खुलती थी। एक तो यों ही गर्मी उपर से घबड़ाहट, माथे पर पसीने की बूँदे चुहचुहा आईं। समान भी ऐसा न था कि स्वयं उठाकर गाड़ी तक पहुँच सकूँ। पूरा गर्म कपड़ों से भरा ट्रंक तथा रजाई, कम्बल आदि के बोझ से भारी बिस्तर। बड़ी मुश्किल से एक कुली की खुशामद की तथा उसे हाथ पकड़ कर सामान तक ले आया।

उसने भी मेरी हालत का नाजायज फायदा उठाया। बोला-आठआने लूँगा।

मरता क्या न करता। जबर्दस्ती 'हाँ' कहनी पड़ी, ऊपर से उसका अहसान अलग से मानना पड़ा। खैर, भागा-भागा टिकट की खिड़की तक पहुँचा। वहाँ भी भीड़ स्वागत के लिए तैयार। किसी तरह पठान कोट का टिकट लिया। तब तक पौने नौ बज चुके थे। कुली के पीछे पीछे प्लेटफार्म की ओर दौड़ा। जल्दी में एक खोंचेवाले से टकराते-टकराते बचा। वरन वहीं एक कांड उपस्थित हो जाता। देखा, तीन नं० के प्लेटफार्म पर गाड़ी लगी है। किसी तरह से कूदते फाँदते गाड़ी के समीप पहुँचा तो डिब्बे में जिधर भी नजर डाली, जगह नदारद। आखिर तीसरे दर्जे के यात्री को इससे अधिक आशा भी क्या हो सकती है। उधर गाड़ी सीटी दे रही, इधर मैं डिब्बे में झाँक-झाँक कर जगह तलाश कर रहा था। कुली अलग रोब दे रहा था। अंत में जबर्दस्ती एक डिब्बे में दरवाजा ढकेलकर घुस गया। कहीं जगह तो थी नहीं इसलिये नये डिजायन के डिब्बों में आमने सामने दरवाजों के बीच जो जगह होती है वहीं पर बक्स तथा होल्डाल डाल दिया और एक किनारे खड़ा हो गया। साहस बटोर कर डिब्बे में एक उड़ती हुई नजर डालीं तो सिवाय अपने भाग्य को कोसने के और कुछ न कर सका।

कुली को पैसा देकर चलता किया। डिब्बा तो आदमी और सामान से ठसाठस भरा था। कहीं तिल धरने की भी जगह नहीं। गुलामी के जमाने में केवल एक ब्लैक होल ट्रेजेडी हुई थी जिसकी यादगार कायम कर दी गयी है और आज थर्ड क्लास

का यात्री रोज ही उस ट्रेजेडी का शिकार होता है। मगर एयर कन्डीशन्ड तथा एयर लाइन्स के द्वारा सफर करने वाले देवताओं को इन मानवरूपी पशुओं की ओर ध्यान देने के लिए शायद समय ही नहीं।

पुराने जमाने में एक कहावत थी "वीर भोग्या वसुन्धरा" परन्तु आज स्टैण्डर्ड बदल चुका है। आज तो "धनी भोग्या वसुन्धरा" कहना ही ठीक होगा। इससे कोई मतलब नहीं कि धन का उपार्जन किन हथकंडों से किया गया है, आज का मेहनतकश इंसान किसी सुख सुविधा की अभिलाषा नहीं कर सकता जबकि 'सेठ मुफतराम फोकटरामजी'-शान से अकड़ते हुए, गरीबों की अभिलाषाओं को अपने शरीर के भारी बोझ से कुचलते हुए बगल से आगे निकल जाते हैं।

खैर, गाड़ी ने सीटी दी। प्लैटफार्म पर कुछ क्षणों के लिए हलचल सी मच गई। भाग दौड़ का बाजार गर्म हुआ। लोग डिब्बों की ओर लपके। धीरे-धीरे ट्रेन गतिमान हो उठी। मैं दरवाजे के सहारे चुपचाप खड़ा था और देख रहा था, कोई रूमाल हिला रहा है तो कोई खाली हाथ। गाड़ी में बैठे लोगों की निगाहें प्लेटफार्म पर खड़े सगे सम्बन्धियों तथा मित्रों से मिल-मिलकर बिछुड़ रही थीं। एक खिड़की से नववधु बाहर झांक रही थी, पलकें आँसुओं से गीली। बाहर माता-पिता भी रूमाल से आंखें पोंछ रहे थे। बगल के डिब्बे में कालेज के कुछ लड़कों का ट्रिप

काश्मीर जा रहा था। उन्हें विदा करने आये हुए लड़कों का शोरगुल तथा हंसी के कहकहे सभी कुछ बदलते हुए दृश्यों के समान दृष्टिगोचर हो रहा था।

वाकई, जिन्दगी भी तो चलते फिरते दृश्यों के ही समान है। रफ्तार कुछ और तेज हुई। स्टेशन पर लगे बिजली के लट्टू धीरे-धीरे आखों से ओझल होने लगे। बाहर अंधकार ने अपना राज्य स्थापित कर लिया और श्रीनगर एक्सप्रेस अपनी पूर्ण गति से अंधकार के वातावरण को भेदती हुई गन्तव्य स्थान को ओर बढ़ चली।

धीरे-धीरे डिब्बे में नीरवता छा गई। लोग अपनी-अपनी सीटों पर ऊँघने लगे। मेरे बगल में तीन दक्षिण भारतीय आकर जम गये तथा जोर-जोर से बातें करने लगे। पूछने पर पता लगा कि वह काश्मीर के मोर्चे पर जा रहे हैं तथा इस समय घर से छुट्टी बिताकर लौट रहे हैं। धीरे-धीरे उनकी बातों का जोश भी ढीला पड़ गया और वह भी उँघने के कार्यक्रम में शामिल हो गये। इसी बीच उनमें से एक फौजी को बीड़ी की तलब महसूस हुई और तुरंत वह धुएं की बदबू से वातावरण को दूषित करने लगा। मुझे बहुत बुरा लगा परंतु चुपचाप पड़ा रहा क्योंकि यह तो व्यक्तिगत स्वतन्त्रता का प्रश्न है जिसपर हमारे देश को नाज है। और इस स्वतंत्रता के नाम पर दूसरे के सुखों का अपहरण तो मामूली सी बात है। थोड़ी देर बाद उसने बीड़ी का अन्तिम

कश जोरों से खींचा। फिर टुकड़े को गाड़ी के एक कोने में फेंक कर टांगें फैलाकर अंगड़ाई ली और ऊँघने में मस्त हो गया।

मैंने भी अपने बक्स तथा बिस्तरे को एक लाइन में लगाया तथा उसी पर लेटने का प्रयत्न करने लगा। जरा पैर नीचे खिसकाये, बदन को ढीला किया और पड़ रहा। ट्रेन तेज रफ्तार से भागी जा रही थी परंतु मेरे विचारों की रफ्तार उससे कहीं अधिक तेज थी। मुझे संतोष था कि इतनी विघ्न-बाधाओं के बावजूद भी मैं काश्मीर की ओर बढ़ रहा था। गाड़ी की रफ्तार धीमी मालूम पड़ी। काश! मेरे पंख होते और मैं उड़कर तुरंत वहां पहुंच जाता। खैर, वास्तविक पंखों के स्थान पर यदि रुपयों के ही पंख होते तो भी मैं यान के पंखोका आधुनिक युग में सहारा तो ले ही सकता था। मगर मुझे सन्तोष करना था। क्या यह कम था कि मैं अपने चिर अभिलाषित, स्वप्नों के लोक की ओर अग्रसर हो रहा था। पता नहीं अनजाने ही कितनी बार मेरी कल्पना उस भावमयी भूमि की सैर कर चुकी थी। कश्मीर, संसार के असंख्य लेखकों तथा कवियों का कल्पना लोक तथा जहांगीर के जीवन की सबसे प्यारी भूमि, जो मरते दम तक उसके मोह को न त्याग सका तथा जिसकी पंक्तियां रह- रह कर मेरे कानों में गूंज उठतीं। उसने कहा था :--

गर फिर दोस वर रोये जमीं अस्त,
हमीं अस्तो, हमीं अस्तो, हमीं अस्त।

'अगर संसार में कहीं स्वर्ग है तो यहीं है. यहीं है, यहीं है।' और मैं उस स्वर्ग की ओर बढ़ रहा था हृदय में चिर संचित अभिलाषाओं का उल्लास लिये।

अभी कुछ देर पहले जब मैंने इष्ट मित्रों से विदा ली थी, वह दृश्य मेरे मानस पलट पर घूम गया। कितनी प्रसन्नता थी मेरी आंखों में। परंतु इस रेल के डिब्बे की भीड़-भाड़ के बीच भी मैं एक अजीब उदासी, एक अकथनीय अकेलापन का अनुभव करने लगा। लोग कश्मीर जाते हैं आनंद का उपभोग करने के लिये। परन्तु क्या अकेले में भी आनंद उठाया जा सकता है। जरा मुझे यह बात उल्टी सी लगी। चारा भी क्या था। जिसने जीवन के तीस वर्ष यों ही बिता दिये उसके लिये कुछ भी सोचना बेकार। विचारों की गति तीव्रतर हो उठी। तो क्या वास्तव में मैं अकेला हूं या अकेला ही रह जाऊंगा। कौन जाने! जहां मनुष्य की बुद्धि सोचने में असमर्थ हो जाती है, वह भाग्यवादी बन जाता है। परन्तु मैंने तो आज तक कभी भी भाग्य से समझौता नहीं किया। तो क्या अब मुझे समझौता करना ही पड़ेगा? क्या मेरे कल्पना लोक की भावमयी नारी केवल एक छाया की भांति आखों से ओझल हो जायेगी? क्या मुझे अपने विचारों के अनुकूल जीवन साथी प्राप्त करने का सौभाग्य नहीं प्राप्त हो सकेगा? क्या हमारे समाज का पिछड़ा हुआ वातावरण, मुझे सफल चुनाव का मौका नहीं प्रदान करेगा? इसी समय गाड़ी झटके के साथ रुकी। साथ ही मेरी विचार धार

को भी ठेस लगी। विवाह का प्रश्न आजतक मेरे जीवन की सबसे उलझी हुई गुत्थी रहा है। जिसे सुलझाने में मैं असमर्थ रहा हूँ। और इस समय भी वह एक प्रश्न चिन्ह बनकर मेरी नजरों के सामने घूम गया। परन्तु यह तो कोई उपयुक्त समय था नहीं कि इस विषय पर विचा किया जाय। क्योंकि यह तो प्रत्यक्ष था कि मैं आज भी अकेला हूँ तथा अकेले ही जा रहा हूँ अपने कल्पना के स्वर्ग लोक में। जहां कि मुझे उस साथी की सबसे अधिक जरूरत थी। खैर हुआ करे जरूरत। क्या संसार के प्रत्येक मनुष्य की समस्त कामनायें, इच्छायें, आकांक्षाएं पूर्ण ही हो जाती हैं? यह दुनिया तो एक मृगमरीचिका है, इच्छाओं के हवन कुंड में जितना ही घी डालो, अग्नि तीव्रतर होती जाती है। इस लिये किसी कवि ने ठीक ही कहा है:—

गोधन, गजधन, बाजिधन,
और रतन धन खान
जब आवे सन्तोष धन,
सब धन धूरि समान।

और यही सोचकर मैं भी अपने अरमानों से मचलते दिल को सन्तोष रुपी चादर से ढकने का व्यर्थ प्रयत्न करता रहा। और इसी उधेड़बुन में मुझे हल्की सी झपकी आ गई।

फिर एक झटका और मेरी आंखें खुल गईं। चाय गरम, बीड़ी, सिगरेट की आवाज कानों में गूंज उठीं। जलंधर स्टेशन आ चुका था। याने मैं अम्बाला, लुधियाना वगैरह पार कर चुका

था। भोर की लालिमा पूर्वी क्षितिज पर आक्रमण कर उठी ! अन्तिम तारा एक कोने में झिलमिला रहा था, चांद एक कटी हुई पतंग की तरह एक ओर झुका पड़ रहा। सुबह की सुहावनी हवा के हल्के झोंके मेरी कल्पना से विभोर अलसाई आखों को थपथपाने लगे। गाड़ी चली और मेरी निगाहें झिपती गईं। फिर वही कल्पना के ताने-बाने और मैं। परन्तु नींद न जाने कहां भाग गई। चलो अच्छा ही हुआ। सवेरा हो चुका था तथा लाइन के दोनों ओर नयनाभिराम दृश्य दिखाई देने लगे।

और यह पठानकोट भी आ पहुँचा। रेलों का अन्तिम स्टेशन तथा काश्मीर के भीतर प्रवेश करने का द्वार। केवल काश्मीर ही नहीं वरन् कांगड़ा एवं कुल्लू घाटी जाने का भी तो यही मार्ग है यहां श्री नगर जाने के लिये बस तथा हवाई अड्डा दोनों ही हैं। साथ ही काश्मीर विजिटर्स ब्यूरो तथा आई० ए० सी० के आफिस भी हैं।

★

२. | जम्मू एवं कश्मीर की ओर

पठानकोट प्लेटफार्म पर हलचल की धूम। देश के अन्य भागों में पड़ने वाली असह्य गर्मी से भागकर आये हुए भिन्न-भिन्न प्रकार के लोगों का हजूम। तरह-तरह की सुन्दर एवं रङ्गीन पोशाकें। प्लेटफार्म एक अजायबघर की तरह लग रहा था। सभी कश्मीर पहुँचने को आतुर एवं व्यस्त। कुली ने सामान उठाया और मैं स्टेशन से बाहर आया और बस यहीं से जम्मू एवं कश्मीर सरकार का टूरिस्ट विभाग सैलानियों की सेवा में हाजिर। हरेक जरूरत को पूरा करना यह विभाग अपना कर्त्तव्य तथा धर्म दोनों ही समझता है। एक ओर बसों की कतारें इन्तजार में खड़ी। टिकट की खिड़की पर पहुँचें। वहां अपना नाम दर्ज करा दें। बारी-बारी से सामान तौला जायगा तथा टिकट के साथ बस नम्बर भी बता दिया जायगा। देखिए यहाँ अधिक देर मत लगाइये क्योंकि लक्ष्य तो श्रीनगर

है न तथा अभी काफी लम्बी मंजिल तय करनी है। इसलिये जल्दी कीजिए। सामान लद चुका है तथा ड्राइवर एवं कनडक्टर इन्तजार कर रहे हैं। जैसे ही यात्रियों ने अपनी जगहें लीं, बस चल दी।

हृदय पुनः उल्लास से भर उठा। मगर अभी धैर्य की जरूरत है। क्योंकि रास्ता काफी लम्बा है। पूरे २६७ मील। और वह भी ऊँचे-नीचे एवं भयावह रास्तों के बीच। इसलिए घबड़ाइये नहीं, तसल्ली रखिए। सब्र कड़वा है मगर सब्र का फल मीठा है। बस का ड्राइवर अपनी जिम्मेवारी खूब समझता है। उसे मालूम है कि आप श्रीनगर पहुँचने के लिए कितने उतावले हो रहे हैं। फिर भी समय तो लगेगा ही। और देखिए, बस तेज रफ्तार से बढ़ रही है।

पठानकोट छोड़ते ही सुन्दर दृश्य प्रारम्भ हो जाते हैं। हवा में भी एक अजीब सुगन्ध का अनुभव हुआ। यहाँ तो नहरों का जाल बिछा है। कलकल, झलमल करता जल, छोटे-छोटे पत्थरों के टुकड़ों पर उछलता कूदता मस्ती से बहा जा रहा है, कुछ गुनगुनाता तथा किसानों को उन्नत भविष्य का सम्वाद देता। मैंने सोचा जब यात्रा के प्रारम्भ में ही इतने मनोहारी दृश्य दिखाई दे रहे हैं तो भला आगे क्या होगा। और मन कल्पना में विभोर हो गया। क्रमशः बस ऊँचाई की ओर बढ़ने लगी। रास्ता भी घुमावदार शुरू हो गया। करीब तीन घंटों बाद हम लखनपुर एवं सांबा पार करते हुये जम्मू पहुँचते हैं। यह पठान-

कोट से ६४ मील दूर तथा समुद्र से १००० फीट की ऊँचाई पर स्थित है। बस सीधे विजिटर्स ब्यूरो के आफिस में जाकर लगी। एक-एक कर सभी बसें आकर रुकने लगीं। यहाँ खाने--पीने एवं ठहरने का सुन्दर प्रबन्ध है। कुछ देर विश्राम कीजिए तथा पेट-पूजा से निवृत हो लीजिए, क्योंकि फिर दिन भर का सफर है। यहाँ सभी सुविधायें प्राप्त होंगी। देखने योग्य स्थानों मे रघुनाथ जी का प्राचीम मन्दिर सबसे महत्त्वपूर्ण है। यहाँ डाक-तार घर, उच्च कोटि के होटल, डाक बङ्गला तथा आई० एस० सी० आदि के आफिस भी हैं। इस नगर को शीतकालीन राजधानी होने का भी सौभाग्य प्राप्त है। यह कश्मीर राज्य का एक महत्त्वपूर्ण अङ्ग है। इसीलिए इस राज्य का नाम जम्मू एवं कश्मीर पड़ा है। यहाँ के अधिकतर निवासी डोगरा राजपूत हैं तथा प्रसिद्ध वीर एवं लड़ाके हैं। इन्हीं के पूर्वज श्री गुलाब सिंह ने अपनी वीरता एवं चातुर्य से इस राज्य की नींव डाली थी। इनकी भाषा डोगरी है तथा काश्मीरी से एकदम भिन्न। पहनावा भी अलग।

देखिये ड्राइवर हार्न दे रहा है। सब लोग अपनी-अपनी सीटों पर आ जमे। बस चल दी। कुछ देर बाद जम्मू नगर पीछे छूट गया। अब हम तवी नदी के आस-पास से गुजर रहे हैं। ऊँचाई बढ़ने के साथ-साथ रास्ता भी अधिक पेचीदा होता जा रहा है। एक ओर नीची घाटी तो दूसरी ओर ऊँचे पहाड़। और इन घुमावदार रास्तों को पार करते हुये 'तवी' को भी पार करते

हैं, एक पुल के द्वारा। फिर तो ऐसा मालूम होता है मानो 'तवी' आँख मिचौनी खेल रही है। कभी दिखाई देती है तो कभी पहाड़ों की ओट में छिप जाती है। यहीं से तरह-तरह के ऊँचे पहाड़ी पेड़ मिलने आरम्भ हो जाते हैं। रास्ते में एक छोटी सी टनल भी पार करनी पड़ती है। अब हम 'उधमपुर' के समीप हैं, जो २००० फीट से अधिक ऊँचाई पर स्थित है। यह एक बड़ा कस्बा है तथा डाक घर, रेस्ट हाउस एवं होटल का भी प्रबन्ध है।

उधर बस की खिड़की से तो झाँकिये। धीरे-धीरे शाम पहाड़ों पर उतर रही। हल्के बादल धूप से खिलवाड़ कर रहे। भूरे बादलों का एक छोटा सा टुकड़ा पहाड़ों पर मस्ती से झूम रहा। जैसे मस्त हाथी इठलाता चला जा रहा। वाह ! हल्की बूंदा बांदी भी शुरु हो गई। काश्मीर की प्रकृति अपनी गोद में शरण लेने वालों का स्वागत कर रही है न ! भूल जाइये दिल्ली, पठानकोट तथा जम्मू की गर्मी। अब हम पठानकोट से १२६ मील दूर तथा ५७०० फीट की ऊँचाई पर हैं। और यह 'कुद' आ गया। बस रुकी। सड़क के किनारे होटलों की कतारें। यहां डाक घर एवं रेस्ट हाउस भी हैं। दृश्य तो यहां बहुत सुन्दर हैं। दूर तक फैले हुए ऊंचे नीचे पहाड़ों की कतारें मानो एक दूसरे से होड़ ले रही। और नीचे घाटियों में ढलानों पर छोटे-छोटे खेतों के टुकड़े मानों किसी माली ने क्यारियां तैयार की हों। उस के बीच छोटे-छोटे मिट्टी के इकमंजिले मकान जिनमें

खिड़की आदि का कोई खास प्रबन्ध नहीं। पास ही बहता हुआ झरना। बस यही है इस प्रदेश के गांव। यहां एक बात ध्यान देने योग्य है कि मकानों की छतें चपटी हैं। क्योंकि ऊँचे पहाड़ों की ओट में होने के कारण इस ओर बर्फ नहीं पड़ती। यहां हवा भी तेज है इसलिए एक हल्के गर्म कपड़े की जरूरत महसूस हो सकती है।

आध घण्टे बाद पुनः यात्रा प्रारम्भ हुई। अब हम 'चनाब' नदी के पास से गुजर रहे हैं। कितनी तेज धार है इसकी। बहते हुए पानी का पत्थरों से टकरा-टकरा कर उछलना और उससे उत्पन्न होने वाली सफेद झाग, मन को बरबस अपनी ओर खींच लेगी तथा कान भी पत्थरों के बीच से जल के बहने वाली गूंज से कदापि अभिज्ञ नहीं रह सकते। ऐसा मालूम होता है मानो प्रकृति स्वागत में गान गा रही। अपने उन्मत्त हृदय की प्रसन्नता मुखरित कर रही, उंडेल रही। फिर भला कोई मानव हृदय कसे अपने को इस आवाहन से दूर रख सकता है। नीचे देखिये। नदी के तेज बहाव में बल खाते, उछलते, कूदते, पत्थरों से टकराते लकड़ी के कुन्दे या पेड़ बहे जा रहे हैं। हम मैदानों में बसने वालों के लिये यह भी दृश्य सर्वथा नवीन है।

अभी तक तो नजरें सड़क से दूर पहाड़ की चोटियों तथा नीची घाटियों में बलखाती' नदियों के ही जाल में उलझी थीं। तनिक सड़क पर भी तो नजर डालिये। बीच-बीच में मिलने वाले गड़ेरियों के झुंडों को क्या आपने नहीं देखा। सैकड़ों की तादाद

में भेड़ तथा बकरियाँ लाइन में घंटी टुनटुनाते बरबस ध्यान खींच लेंगी। साथ में गड़ेरियों का परिवार। टट्टुओं पर उनका सामान लदा हुआ। औरत, मर्द, बूढ़े, बच्चे तथा जवान। कोई पैदल तो कोई टट्टुओं पर। और झुंड के पीछे अथवा किनारे, ऊंचे बड़े, झबरे पहाड़ी कुत्ते अवश्य दिखाई देंगे। यह भी उस कारवां के अभिन्न अंग हैं। गड़ेरिये इन्हें 'बेटा' कह कर पुकारते हैं तथा पुत्र के समान प्यार भी करते हैं। इन खाना बदोशों का जीवन भी कितना सादा तथा जरूरतें भी कितनी कम। सारा साल पहाड़ों पर इधर से उधर भटकते रहना तथा व्यापार करना ही इनकी जिन्दगी। न कहीं घर और न बार। इनकी गति सर्वदा चलायमान, जैसे बहते दरिया का पानी तथा जिन्दगी मस्त सफर है। मानों काश्मीर के निरन्तर बहने वाले झरनों का जीवन इनमें मूर्त्त हो उठा है। कहीं शाम तो कहीं सवेरा। नीचे की ठोस जमीन और ऊपर फैला हुआ अनंत आकाश, यही इनके अभिन्न साथी एवं आश्रयदाता।

शाम का धुंधलका अन्धकार का आवरण ओढ़ चुका है। बाहर कुछ दिखाई नहीं दे रहा। परन्तु इठलाते झरनों के पत्थरों से टकराने की गूंज अब भी दिमाग पर हल्की थपकियां देकर एक अभूतपूर्व बदहोशी के वातावरण का सृजन कर रही। मानों लोरियां गुनगुनाकर थके हारे मन को कल्पना के स्वप्निल अनंत लोक के द्वार तक पहुँचाने की सफल चेष्टा में व्यस्त। अभी तक तो हम बाहर के दृश्यों में उलझे थे। अब आँखें बरबस ही बस

के भीतर चक्कर काटने लगेंगी। दिन भर तो बाहर की दुनियां में ही इतने व्यस्त रहे कि अगल-बगल को परखने का अवसर ही न मिला। खैर, देर हुई तो क्या। अभी भी श्रीनगर पहुँचने म काफी देर है। उधर हमारे बगल में जो सज्जन अपनी पत्नी के साथ बैठे हैं, उनसे मिलिये। झिझक कैसी और क्यों। यहां तो सभी हैं हम सफर, हमराही। आप देहली में व्यापार करते हैं। दिन-रात की लगातार झंझटों से ऊब कर, पत्नी के साथ कुछ दिन एकान्त में जीवन बिताने जा रहे हैं। इधर अगली चार सीटों पर महाराष्ट्री लोगों का झुंड है। बायीं ओर एक सीट पर एक सरदार जी अपनी पत्नी के साथ विराजमान हैं। वह तो बुशशर्ट तथा पैंट में लैस हैं और उनकी श्रीमती जी ने हरे रंग का रेशमी सलवार तथा कुर्त्ता पहन रखा है। ऊपर से मैचकरती हुई ओढ़नी, नाइलोन की। बायें हाथ में सोने की चेन के साथ एक लेडीज रिस्टवाच। बालों को पीछे एक रिबन से बांधकर पौनीटेल में परिवर्त्तित कर दिया गया है। हाथों के नाखून लाल रंग में रंगे हुए तथा बायें हाथ की छोटी ऊंगली का नाखून हद से ज्यादा बढ़ा हुआ जा कि फैशन की एक निशानी है। गालों पर पाउडर और रोज की कृत्रिम लाली और ऊपर से नाखून जैसे रंगे हुए ओंठ जिसे वह बार-बार अपने बैग में से आइना निकाल कर निरीक्षण करती जातीं। उन्हें शायद इस बात की सबसे ज्यादा फिक्र थी कि देखने वाले कहीं उन्हें बदसूरत न समझ बैठें। इस भय का सबसे बड़ा कारण शायद यह था कि उनके मुंह पर चेचक के

गहरे दाग थे जिन्हें किसी भी प्रकार से छिपाना वह अपना धर्म समझती थीं।

उनके ही साथ एक और पंजाबी दम्पत्ति बैठे थे। ऐसा मालूम होता था कि उनकी नई-नई शादी हुई थी, तथा वे हनीमून पर जा रहे थे। पति महोदय तो पतले दुबले आंखों पर मोटे फ्रेम का ऐनक चढ़ाये चिड़ी के गुलाम से लग रहे थे। चौड़े पांचे की, घुटनो से कुछ नीची उनकी पैंट उनके आवारेपनका प्रदर्शन कर रही थी। और ऊपर से नाइलोन की छींट का बुशशर्ट, जिसके नीचे उनके शरीर.की एक-एक हड्डी आसानी से गिनी जा सकती। और श्रीमती जी का क्या कहना। वही खून जैसे रंगे हुए ओंठ मानो रण चंडी तुरत'रक्तपान करके आई हों। दाहिने गाल के निचले भाग में ठुड्डी के पास बनाया हुआ 'बिउटीस्पौट'। हल्के नीले रंग की नाइलोन की साड़ी जिसके नीचे साटन के साये पर किया हुआ काम झलक रहा। कमर तक खुला हुआ नाइलोन का ब्लाउज़ जिसकी आड़ में रंगीन चोली के नीचे दो उभरे हुए पुष्ट उरोजों का अप्राकृतिक उभार स्पष्ट दिखाई दे रहा। और चोली के नीचे खुली हुई कमर का गोरा भाग बरबस ही नजरों को अपनी ओर जबरदस्ती खींच लेता। माथे पर मांग नदारद। सभी बालों को पीछे की ओर सीटकर एक भारी रिंगदार जूड़ा। इस वेश-भूषा में वह अपने को मेनका तथा उर्वशी से कम नहीं समझ रही होंगी। फिर भला कलयुगी विश्वामित्रों की क्या मजाल जो उनके आमंत्रण को अस्वीकार कर सकें। पता नहीं आजकल

खास तौर से पंजाब में क्या फैशन चल गया है कि मांग से सिन्दूर भी गायब हो गया है तथा सुहाग की दूसरी कोई निशानी भी नारियों के शरीर पर दृष्टिगोचर नहीं होती जिसके कारण कुमारी अथवा विवाहिता की पहचान भी कठिन हो गई है।

परन्तु सबसे अधिक आकर्षक थीं कलकत्ता के किसी विदेशी आवरण में ढके हुए कालेज की कुछ छात्राएं, जिनमें थीं अधिकतर एग्लोइन्डियन, क्रिश्चियन अथवा.अमीर घरों की भारतीय ललनायें। सभी की सभी बाहों तक कटी हुई कमीज तथा जांघों से चिपकी हुई फुलपैंटों से विभूषित। गले तक कटे हुए बाल। कुछ ने रंगीन हैट लगा रखे तो कइयों ने बालों को रंगीन स्कार्फो से बांध रखा। उनकी टोली एक अजीब समां बांध रही। जहांगीर के जमाने में तो सीधे-साधे चेहरे ही काश्मीर में नजर आते होंगे, परन्तु आज तो संसार भर का सौन्दर्य रूपीक्रीम काश्मीर की घाटी में तैरता हुआ नजर आता है। काश! आज वह होता तो शायद काश्मीर के बारे उसने कुछ और अधिक ही कहा होता।

रास्ते में 'बटोत' पर कुछ क्षणों के लिये बस रुकी। पुनः चल दी। यह स्थान ५११६ फीट की ऊंचाई पर स्थित है। अस्पताल, होटल, डाक-तार घर एवं डाकबंगला। सभी सुविधाओं से परिपूर्ण।

रामबन तथा रामसू को पीछे छोड़ती हुई बस रात आठ बजे के करीब "बानिहाल" के डाक बंगले पर जाकर रुकी। यह

स्थान ५३३० फीट की ऊंचाई पर स्थित एवं पठानकोट से १८२ मील दूर। यही है आज की रात का पड़ाव। सभी बस से उतर पड़े।

सामान उतारा गया। यहां डाक बंगला भी है, रेस्ट हाउस भी। इसीलिये जगह कहीं न कहीं मिल ही जायगी। सिर्फ रात ही तो बितानी है। डाकबंगला शायद पहले से ही रिजर्व है। चलिये रेस्ट हाउस ही क्या बुरा है। चपरासी से मिल कर सामान रखवाने का इन्तजाम हुआ तथा खाने का भी। परन्तु अभी खाना मिलने में काफी देर है। तो कुछ देर बाहर ही क्यों न घूम लिया जाय। दिन भर बैठे-बैठे टांगों तथा पीठ की तो हालत बिगड़ गई। बाहर दूध जैसी चांदनी के आंचल की ओट में प्रकृति मुस्कुरा रही, विहंस रही। थोड़ी दूर पर एक झरना बह रहा जिससे निकलने वाली मधुर ध्वनि दूर से आते हुए संगीत के झंकार के समान अजीब मादकता की सृष्टि कर रही। उधर बर्फ से ढंकी एक चोटी के पीछे चांद झांक रहा, जिससे बादल का एक टुकड़ा आंख मिचौनी खेलने में व्यस्त। धवल मेघ पर छिटकी चांदनी में ऐसा लग रहा, मानो हंस आकाश में उड़े जा रहे। चारों ओर फैली ऊँची-नीची चोटियां, धूमिल चांदनी में प्रहरी के समान लग रहीं। कुछ क्षणों के लिये मैं अवाक, आत्मविभोर सा खो गया प्रकृति के उस माया जाल में। फिर तन्द्रा-भंग हुई। रात काफी जा चुकी थी। खाना खाया और बिस्तर पर पड़ते ही प्यारी नींद ने अपनी कोमल बाहों में समेट लिया।

सबेरे पांच ही बजे शोर प्रारम्भ हो गया। सभी यात्री प्रस्थान की तैयारी करने लगे। साढ़े छः बजे तक बानिहाल छोड़ देना नितान्त आवश्यक, अन्यथा दोपहर दो बजे तक बैठना पड़ेगा। कारण यह कि अभी जवाहर टनल का एक ही भाग बना है जिससे आना तथा जाना दोनों ही काम, इसी से लिया जाता है। इसीलिये सबेरे साढ़े सात तक श्रीनगर की ओर जाने वाली गाड़ियों के लिये रास्ता खुला रहता है। उसके बाद एक बजे तक पठानकोट की ओर जाने के लिये। बानिहाल में डाकघर तथा छोटा सा बाजार एवं अस्पताल भी है। यहां से सात मील की दूरी पर है जवाहर टनल, आधुनिक विज्ञान का एक अभूतपूर्व चमत्कार। यह ७२०० फीट की ऊंचाई पर स्थित है तथा इसकी लम्बाई है ८१०० फीट। यह टनल साल भर खुला रहेगा। जिसके द्वारा काश्मीर घाटी का देश के अन्य भागों से अविच्छिन्न सम्बन्ध स्थापित हो गया है। तथा १६ मील की बचत भी हो गई है। वरन् पहले बानिहाल से २१ मील दूर तथा ८६८५ फीट की ऊंचाई पर स्थित एक टनल से होकर जाना पड़ता था जो कि वर्ष में केवल कुछ ही महीनों के लिये खुलता था। अन्यथा बर्फ जमी रहने के कारण रास्ता बंद हो जाता था। समय हो गया। एक-एक कर बसों का कारवां चल पड़ा। कुछ बाद टनल दिखाई देने लगी। फिर बस मुख्य भाग के पास आकर रुक गई। यहां पहरे आदि का खास प्रबन्ध है। एक तो ७००० फीट से अधिक की ऊँचाई, ऊपर से हवा इतनी तेज कि शरीर में कंपकंपी दौड़

गई। कुछ देर बाद सिगनल हुआ और हम टनल के भीतर प्रवेश कर गये। चारों ओर अंधकार में टिमटिमाते बिजली के लट्टुओं की कतार आकाश में छिटके तारों के समान लगती है। बीच-बीच में पानी टपकता हुआ मिलेगा जिसके निकास के लिये नालियों का समुचित प्रबन्ध। टनल के भीतर भी हवा बहुत ठंढी। अंधकार के बाद पुनः प्रकाश का आविर्भाव हुआ। हमारी बस टनल को पार कर खुले आकाश के नीचे आ गई। यहीं से हम थोड़ी ऊँचाई पर जमे बर्फ के दर्शन करते हैं। अब हम काश्मीर की घाटी में प्रवेश कर रहे हैं। जवाहर टनल ही इसका प्रवेश मार्ग है। कंडक्टर सभी यात्रियों से पूछताछ कर रहा है, वेरीनाग जाने के बारे में। यह दर्शनीय स्थान सड़क से कुछ दूर हटकर पड़ता है। केवल आठ आने प्रति व्यक्ति के हिसाब से अतिरिक्त देने पड़ते हैं। और लीजिये बस 'वेरीनाग' की ओर मुड़ गई ।

वेरीनाग ! जहाँगीर की कल्पना शक्ति तथा सौन्दर्य प्रेम का ज्वलंत प्रमाण। कहते हैं कि यहीं झेलम का स्रोत है। स्रोत तो कहीं बहुत नीचे है, क्योंकि पानी के निकलने का आभास ऊपर की सतह पर पता नहीं लगता। हां, चश्मे के चारों ओर नक्काशी-दार पत्थरों का एक अष्टभुज तालाब बना हुआ है। यह तालाब भी सब ओर दीवालों से घिरा है। जिस पर फारसी में कविताएं लिखी हैं। चश्में के साथ ही एक बहुत सुन्दर बाटिका है। जिसमें चिनार के पेड़ ध्यानस्थ मनीषी के समान खड़े दिखाई देते हैं। वास्तव में काश्मीर का सौन्दर्य तो चिनार के भव्य-वृक्ष एवं सघन

सुन्दर पत्तों में परिलक्षित होता है। इसकी ऊंचाई साठ फीट से अधिक होती है। बाग में चेरी आदि अन्य फलों के भी वृक्ष हैं। बाग के बीचों-बीच से एक नहर गुजरती है, फव्वारों से सुसज्जित। जिसमें चश्मे का पानी तेजी के साथ बहता है। इसके तेज बहाव को देखकर ही अनुमान होता है कि कितना अधिक पानी यहां से निकलता है। और जब यह नहरें बाग को पार कर के बाहर निकलती हैं तो एकाएक इसका पानी काफी ऊंचाई से नीचे गिरता है जो एक अनुपम दृश्य की सृष्टि करता है। इसका पानी बहुत ही स्वादिष्ट, परन्तु ठंडा भी इतना कि हाथ डालते ही सुन्न हो जाय। ऊँचे पहाड़ों की गोद में स्थित 'वेरीनाग' ऐसा मालूम होता है जैसे माता के आंचल से एक सुन्दर शिशु झांक रहा। सुबह का सूरज अपनी हल्की किरणों को हिमाच्छादित शिखरों पर फेंक कर बर्फ में भिन्न-भिन्न प्रकार के रंगों की चमक पैदा कर रहा है। जिसे देखकर दर्शक आत्म-विभोर हुए बिना नहीं रह सकता।

कुछ देर बाद पुनः प्रस्थान। यहीं से काश्मीर घाटी का दर्शन मिलना प्रारम्भ हो जाता है। खेत भी चौरस तथा पानी से भरपूर मिलेंगे। काश्मीर की घाटी ८०मील के करीब लम्बी तथा चारों ओर हिममण्डित ऊँचे पहाड़ों से घिरी। इसी भाग को 'संसार का स्वर्ग' कहलाने का गौरव प्राप्त है। टनल पार करते ही मकानों का डिजाइन बदल गया। यहां छतें चपटी होने के बजाय ढालू मिलेंगी। कारण यह कि टनल के इस पार जाड़ों में खूब बर्फ

गिरती है। मकान अधिकतर लकड़ी के ही मिलेंगे क्योंकि यह बहुतायत से मिल जाती है।

और लीजिये "काजी गुंड" आ गया। यह ५६६७ फीट की ऊंचाई पर है। यहां डाकघर भी है तथा डाकबंगला भी। परन्तु इसका महत्व इसलिये अधिक है क्योंकि यह फलों के व्यापार का केन्द्र है। कुछ देर बाद पुनः प्रस्थान। "खन्नाबल" भी पीछे छूट गया। यहीं से सड़क बलखाती हुई झेलम के साथ-साथ चलने लगती है। जिसमें माल से लदी नौकाएं तैरती मिलेंगी तथा काश्मीरी जीवन का वास्तविक दर्शद मिलना भी प्रारम्भ हो जायेगा। अब आप अवन्तीपुर से गुजर रहे हैं। यहाँ पुराने मन्दिरों के खण्डहर तथा स्मृतिचिह्न बहुत मिलेंगे। कहते हैं कि राजा अवन्ती वर्मन ने यहां एक नगर बसाया था जिसे सिकन्दर 'बुतशिकन' ने तहस-नहस कर डाला। बसपाम्पुर से गुजर रही है। संसार भर में यह स्थान अपने केसर जाफ्रान के खेतों के लिये प्रसिद्ध है। कहते हैं कि केसर सिवाय काश्मीर के और कहीं भी नहीं उगती। इसे पैदा करने की शक्ति यहां पाई जानेवाली एक विशेष किस्म की पीली मिट्टी में ही है। कुछ क्षण बाद रेडियो काश्मीर का नया भवन जो अभी बन रहा है, बगल से गुजर गया। सरकारी लकड़ी का कारखना भी पास ही है। इन चीजों को देखकर ही पता लग जाता है कि काश्मीर कितनी तेजी के साथ उन्नति के पथ पर अग्रसर हो रहा है। अब हमारी बस श्रीनगर की साफ चौड़ी एवं छायादार वृक्षों से ढकी सड़क से होकर गुजर रही है। दूर से ही शंकराचार्य पहाड़ी के दर्शन हो जाते हैं। जो उन्नत प्रहरी के समान सैलानियों का मूक स्वागत करती है।

★★★

३. श्रीनगर की सैर

अंत में हम लक्ष्य पर पहुँच ही गये। पठानकोट से २६७ मील दूर। अभी तो केवल दस बज हैं। और बस रुक गई। जम्मू एवं कश्मीर राज्य द्वारा संचालित टूरिस्ट रिसेपशन सेंटर के भव्य इमारत के प्रागण में। वाकई यह इमारत काश्मीरी तथा आधुनिक कारीगरी का एक जीता जागता नमूता है। इसकी छतों में लकड़ी पर किया गया काम बहुत ही चित्ताकर्षक है। पक्के फर्श के प्रांगण से लगा हुआ हरी-हरी घास का मुलायम मखमली मैदान तथा किनारे पर दो मंजिले मकानों की कतार। गेट में घुसते ही बायीं ओर आई० ए० सी० का आफिस है तथा दायीं ओर टूरिस्ट ब्यूरो का दफ्तर। जिस प्रकार की मदद चाहें यहां उपलब्ध। होटल या हाउस बोट में रहने का इन्तजाम, पठानकोट तथा दर्शनीय स्थानों को देखने के लिए टिकट बुक करने की सुविधा, राशन कार्ड का प्रबन्ध, डाक घर तथा उच्च-कोटि का रेस्तरां सभी कुछ

यहीं पर है। टूरिस्ट विभाग की ओर से २४ घन्टे रहने का प्रबन्ध प्रत्येक यात्री के लिए उपलब्ध है। इस बीच में कहीं न कहीं प्रबन्ध हो ही जायगा। परन्तु श्रीनगर में रहने का आनन्द तो केवल उसी दशा में है जबकि हाउस-बोटों में रहा जाय। पहले सामान यथास्थान पर रख कर नहा-धो लेना जरूरी है क्योंकि दो दिनों की लगातार बस यात्रा से वह भी घुमावदार पहाड़ी रास्तों पर, मन को क्लान्त बना दिया है। फिर खा-पीकर थोड़ा सा आराम।

श्रीनगर की पहली शाम, हृदय में चिरसंचित अभिलाषाओं के कपाट खोल रही थी। यहां सभी कुछ है आकर्षक, नवीन। परन्तु कोई खास ठंड का अनुभव नहीं होता। कारण यह कि श्रीनगर की ऊंचाई समुद्र तल से केवल ५,२०० फीट है। तथा बर्फ के पहाड़ भी काफी दूर हैं। टूरिस्ट सेंटर से काश्मीर के बारे में कुछ विवरण सामग्री प्राप्त हो गई थी। जिसमें जानने योग्य सभी बातें दर्ज थीं। जैसे दर्शनीय स्थानों के नाम, आवागमन के साधन एवं किराया, भिन्न-भिन्न महीनों का तापमान एवं पहनने योग्य कपड़ों का विवरण, शिकारा, तांगा एवं हाउस बोटों के रेट। श्रीनगर, पहलगांव एवं गुलमर्ग आदि स्थानों के होटल एवं रहने की अन्य सुविधायें तथा उनके रेट। यहां होटल ४५) रु० से लेकर २) रुपये प्रति व्यक्ति के हिसाब से मिल सकते हैं। विवरण पत्र में और भी बहुत सी जानने योग्य बातें एवं नक्शे दिये हुए हैं जिनके सहारे कोई भी झंझट नहीं उठानी पड़ती।

चलिए पहले किसी हाउस बोट का इन्तजाम किया जाय। यहां हाउस-बोटों की कम से कम चार किस्में हैं। जो कि तीस रुपये प्रति दिन से पन्द्रह रुपये प्रति दिन तक के दर से मिल सकती हैं। इसमें रहना तथा खाना दोनों ही सम्मिलित हैं। यों केवल रहने के लिए भी हाउस-बोट मिलते हैं। जहां खाने का प्रबन्ध अलग से किया जा सकता है। उसकी दर अलग है। प्रत्येक हाउस-बोट में चार छः या अधिक व्यक्ति भी रह सकते हैं। हाउस-बोट की दुनिया ही वास्तव में निराली है। आम तौर से यह ८० से लेकर १२५ फीट तक लम्बी एवं १० से २० फीट तक चौड़ी तथा लकड़ी की बनी होती है। यह झेलम के दोनों किनारों तथा डल झील में चारों ओर बिखरी दिखाई देंगी। प्रत्येक के साथ एक शिकारा तथा एक खाना बनाने की नाव भी होती है, जो कि डोंगा कहलाती है और आम तौर से हाउसबोट वालों के परिवार के निवासस्थान का भी काम देती है। हाउसबोट में ड्राइंग रूम, डाइनिंग रूम तथा दो तीन सोने के कमरे होते हैं। जिनमें बाथरूम साथ में जुड़ा रहता है। कमरों में नीचे दरी अथवा कालीन बिछी हुई। जिन पर आरामदेह फर्नीचर तथा सजावट के लिए अखरोट की लकड़ी पर की गई कारीगरी एवं पेपरमैशी की आकर्षक चीजें। दीवाल में बड़ी-बड़ी शीशेदार खिड़कियां जिनसे बाहर का दृश्य आसानी से देखा जा सके। क्राकरी, कटलरी तथा आधुनिक सुख-सुविधा का पूरा प्रबन्ध एवं बिजली तथा रेडियो भी साथ। ऊपर की खुली हुई छत पर छोटा सा शामियाना लगा हुआ तथा फूलों के गमले। जहां दिन में आराम

कुर्सी पर बैठकर 'सनबाथ' लिया जा सकता है। या शाम की ठंडी एवं मंद बयार के झोंकों का मजा लेते हुए, नीचे जल के वक्ष-स्थल पर सांप के समान रेंगते हुए शिकारों या डूबते हुए सूर्य के लाल बिम्ब का बर्फीले पहाड़ों या उड़ते हुए बादलों के पीछे से मुस्कुराना कितना अच्छा लगेगा, यह केवल अनुभव से ही जाना जा सकता है।

रात हाउसबोट में बीत गई। सूर्य की नवजात किरणों ने शीशे के द्वारा प्रवेश कर गालों पर गुदगुदाना शुरू किया। नेत्र बरबस खुल गये। कुछ क्षणों बाद हाउसबोट के मालिक ने, जिसे काश्मीरी में "हांजी" कहते हैं, झांक कर यह जानने का प्रयत्न किया कि अभी हम चिर यौवना निद्रा देवी के मादक बाहुपाशों से पीछा छुड़ाने में सफल हो सके हैं या नहीं, जागता देख कर अदब से झुककर सलाम किया तथा विनीत स्वरों में पूछा—चाय लाऊं, साब !

हां, मैंने उत्तर दिया।

काश्मीरी या आमतौर की।—

मैंने सोचा आखिर यह काश्मीरी चाय क्या बला है, जरा इसे भी चखना चाहिये। इसलिये उत्तर दिया—काश्मीरी।

परन्तु वह फिर पूछ बैठा—मीठी या नमकीन ! चाय वह भी नमकीन, यह सुन कर मैं बड़े आश्चर्य में पड़ा। तब मैंने उसे पास बुलाया तथा काश्मीरी चाय के बारे में विशेष जानकारी

प्राप्त करनी चाही। उसने बताया कि यहां की चाय हमलोगों की चाय से भिन्न होती है तथा "समावार" नामक बर्त्तन में तैयार की जाती है। इसका चलन रूस में बहुत है। यहां के लोग दूध की जगह पर नींबू तथा नमक डाल कर पीते हैं। परन्तु मैंने दूध युक्त मीठी चाय का ही आदेश दिया। जिसमें इलायची के दाने भी पड़े थे। वास्तव में यह चाय इतनी स्वादिष्ट थी कि उसका जायका मैं जीवन भर कभी भी नहीं भूल सकता तथा जब कभी भी उसकी याद आती है तो जबान पर पानी आ जाता है। मैं जब तक काश्मीर में रहा, इसका नित्य प्रति सेवन करता रहा।

लोगों की राय है कि श्रीनगर पहुंच कर सबसे पहले शंकराचार्य पहाड़ी की सैर करनी चाहिये। क्योंकि उसके ऊपर से सम्पूर्ण काश्मीर घाटी का अवलोकन किया जा सकता है। वहां से श्रीनगर एक नक्शे के समान दिखाई देता है। जिससे भविष्य में भिन्न-भिन्न स्थानों को समझने में दिक्कत नहीं उठानी पड़ती। यदि हरि पर्वत किले की ओर मुंह करके खड़ा हुआ जाय तो श्रीनगर के बीचोबीच से झेलम सांप के समान गुजरती हुई ज्ञात होगी। जिसके किनारे पर खड़े हाउसबोट हँसों की कतार के समान लगते हैं। बीच-बीच में मकानों के झुंड। दाहिने हाथ की ओर दूर तक फैली हुई डल झील का चमकता हुआ जल जिसके बीच में 'नेहरू पार्क' तथा 'चार चिनार' दूर से दिखाई देते हैं। बायीं ओर वृक्षों की कतार तथा पीछे वृक्षों के झुरमुट से झांकता हुआ 'ओबराय पैलेस होटल' एवं सदरे रियासत का विशाल निवास

स्थान। और उसके बाद चारों ओर दूर-दूर तक फैले हुए हिम मंडित पर्वत शिखर। इस पहाड़ी पर शिव का एक बहुत पुराना मन्दिर है। परन्तु लोग कहते हैं कि वेदांत का प्रचार करते हुए जब शंकराचार्य काश्मीर आये तो इसी पहाड़ी पर ठहरे थे। इसीलिए इसका नाम 'शंकराचार्य पहाड़ी' पड़ गया।

'हरिपर्वत' भी एक छोटी सी पहाड़ी ही है जिस पर अकबर का बनाया हुआ एक किला है जो कि चारों ओर एक मोटी दीवार से घिरा है।

श्रीनगर के अन्य पुराने दर्शनीय स्थान 'परीमहल,' हारबन, पान्द्रेंठन का मंदिर, सुलतान जैनुलआबदीन की मां का भव्य मकबरा, हजरतबल जियारत, जामा मसजिद, पत्थर मसजिद तथा शाह-हमदान की मसजिद है। शाहहमदान की मसजिद झेलम के दाहिने किनारे पर स्थित है तथा इसका ऊपरी भाग बौद्ध मठों से मिलता-जुलता है। इसके साथ ही एक हिंदुओं का मन्दिर भी है।

शाम का समय रेजीडेंसी रोड की चका-चौंध एवं चहल-पहल में आसानी से बीत जायेगा। मगर सैलानियों का आकर्षण केन्द्र तो झेलम के किनारे, बांध के साथ दौड़ती हुई सड़क है जिसे अंग्रेजी में "बंड" कहते हैं। एक ओर झेलम का दृश्य, जिसकी मन्थर गति मन को मोह लेती है। उसके वक्षस्थल पर मस्त चाल में तैरते हुए हंसों की कतार के समान शिकारों की पंक्तियाँ दृष्टि-गोचर होंगी। किनारे पर लगे हुए हाउसबोटों की पंक्ति जिनमें बड़ी-बड़ी वुडकट एवं पेपरमैशी की दुकानें भी शामिल हैं। और

सड़क की दूसरी ओर बड़ी-छोटी सजी हुई दुकानें जिनमें काश्मीर की दस्तकारी के सभी अंग सम्मिलित हैं। होटल, रेस्तराँ, फोटोग्राफी की दुकानें तथा श्रीनगर का बड़ा पोस्टऑफिस भी यहीं पर है। परन्तु यदि काश्मीर की सम्पूर्ण दस्तकारी का निरीक्षण किसी एक ही स्थान में करना हो तो काश्मीर गवर्नमेंट आर्ट एम्पोरियम देखना आवश्यक है। यह एक बहुत सुन्दर बाग के बीच में स्थित है, साथ ही रेस्तरां भी है। इसकी भव्य इमारत में कदम रखते ही आप खिल उठेंगे। यह दुमंजिला है। अलग-अलग कक्षों में दस्तकारी के भिन्न-भिन्न नमूने सजाये हुए हैं। एक ओर शाल-दुशाले तथा गर्म कपड़ों की बहार है। इन कपड़ों पर की गयी कसीदाकारी काश्मीर की अपनी चीज है, इस क्षेत्र में यह परशियन या चीनी हस्तकला का आसानी से मुकाबला कर सकती है। दूसरी ओर दरी, कालीन, नमदे आदि। सामने ही सिल्क की चकमकाहट आखों को चकाचौंध कर देगी। ऊपरी भाग में एक कक्ष अखरोट की लकड़ी की चीजों से भरपूर है। इनपर की गई बारीक नक्काशी हैरत में डाल देती है। दूसरे कक्ष में पेपरमैशी की सुन्दर एवं आकर्षक वस्तुओं का भण्डार है। यह असम्भव है कि कोई वहाँ जाय और खाली हाथ लौट आये। एक किनारे जानवरों के रोंयेदार चमड़ों का सामान सजा है। जो कि काश्मीर की अपनी चीज है। दूसरी ओर चांदी की चीजें जिन पर किया गया सुन्दर एवं बारीक काम बहुत ही मनमोहक है। यहीं पता लगा कि काश्मीर के पहाड़ों में नीलम आदि तरह-तरह के कीमती

पत्थर भी पाये जाते हैं। जिनके नमूने यहां मौजूद हैं। यहां की सभी चीजें एक-से-एक सुन्दर और चित्ताकर्षक। कारीगरी में काश्मीरी जीवन की कलात्मकता एवं उच्च कल्पना शक्ति का परिचय मिलता है। ऐसा मालूम होता है मानो यहां के प्राकृतिक दृश्य इन कला के नमूनों में मुखरित हो उठे हैं, खिल उठे हैं। खास तौर से काश्मीर के कढ़ाई किये हुए शाल-दुशालों की धाक तो सारे संसार में है। यहां ऐसे शाल भी बनते हैं जो कि अंगूठी में से होकर निकल जायें। इसीसे यहां के करीगरों की क्षमता एवं अध्यवसाय का आभास मिलता है। किसी-किसी कीमती शाल को बनाने में तो वर्षों लग जाते हैं।

अंत में बेद वृक्ष की टहनियों से बनी टोकरी का उल्लेख किये बिना वर्णन अधूरा ही रह जायगा। केवल टोकरी ही नहीं वरन् कुर्सी मेज आदि भी इसके बहुत सुन्दर बनते हैं और खूब टिकाऊ भी।

श्रीनगर का बहुत बड़ा आकर्षण मुगलों के बागों को लेकर है। मगर इनकी सैर का मजा तभी द्विगुणित हो पाता है जब कि शिकारों का आश्रय लिया जाय, न कि सड़कों द्वारा। शिकारों का महत्व श्रीनगर के जीवन में बहुत अधिक है। यह एक प्रकार की नौका है जिसका ऊपरी भाग ढंका होता है तथा बैठने के लिये आरामदेह स्प्रिंगदार सीटें लगी होती हैं, आकर्षक कपड़ों से ढकी हुई। इनके नाम भी बड़े आकर्षक होते हैं, नरगिस, रोज, ब्यूटीक्वीन, स्प्रिंग फ्लावर, नेपचुन आदि। ऐसे ही नाम हाउस-बोटों के भी होते हैं। झेलम तथा डल झील के आस-पास बसा

हुआ श्रीनगर एक प्रकार से तैरता हुआ नगर है। क्योंकि पानी के ही रास्ते से उसके सभी भागों में जाया जा सकता है। जिसका एक-मात्र साधन शिकारा है। शिकारे सभी जगहों में मिलते हैं।

बागों को घूमने के लिये रविवार का दिन सबसे अच्छा है क्योंकि उस दिन खासतौर से भीड़भाड़ होती है। काश्मीरी परिवार के लोग भी छुट्टी का दिन बागों में बिताना पसन्द करते हैं। दिन भर के लिए शिकारा तय करना अच्छा होगा। बंड से सबेरे प्रस्थान कीजिये। देखिये एक हाथ में हुक्का, जो कि यहां के लोगों का चिर सहचर है, और दूसरे हाथ में डांड़ लिये शिकारे वाला आपकी प्रतीक्षा कर रहा है। पास पहुँचते ही वह अदब के साथ कहेगा—शिकारा चाहिये साब! नेहरू पार्क, डल लेक, मुगल गार्डन, चार चिनार, सेवन ब्रिजेज सब दिखायगा। और कुछ ही क्षणों में शिकारे वालों का झुंड आपको घेर लेगा। सब एक ही बात को अपने-अपने शब्दों में लगातार दुहराते जायेंगे। यहां तक कि आप परेशान हो उठेंगे। फिरन पहने हुए, जो कि यहां के लोगों का खास पहनावा है तथा एक किस्म का लबादा जैसा है, पैरों में जूते नदारद और सिर पर किश्तीनुमा टोपी एवं सलवार, यही उनकी वेशभूषा है। आप असमंजस में पड़ जायेंगे कि किससे बात तय की जाय। इस बीच वह आपस में ही लड़ मरने को तैयार। खैर एक से बात तय हुई। और उनसे जान छुड़ा कर आप अपनी मित्र मंडली के साथ शिकारे पर सवार हो गये। शिकारे वाले गप्प लड़ाने में बहुत तेज होते हैं। रास्ते भर

इधर-उधर की बातों से मन बहलाते रहेंगे। धीरे-धीरे शिकारा आगे बढ़ेगा। अमीरा कदल पीछे छूट गया। कुछ आगे जाने पर दाहिनी ओर एक नहर में घुस गये जो कि झेलम को डल झील से मिलाती है। फिर चिनार बाग के बगल से होते हुए डल गेट के पास पहुँचे। यहां हमेशा शिकारों व नावों का जमघट लगा रहता है, क्योंकि थोड़ी-थोड़ी देर बाद गेट बंद करके दोनों ओर के जल के स्तरों को ऊंचा-नीचा किया जाता है। तब कहीं शिकारे एवं बड़ी-बड़ी नावें इधर उधर आ जा पाती हैं।

४. | श्रीनगर की शाम

दूर ऊँचे बर्फीले पहाड़ों से नीचे उतर कर सन्ध्या की झिलमिल गुलाबी चादर झीलों को भी ढंकती जा रही है। झील के स्वच्छ एवं शांत जल में बर्फ से ढंकी चोटियों के पीछे डूबते हुये सूर्य की लालिमा का प्रतिबिम्ब कितना मनमोहक लगता है। आपका शिकारा डल के रंगीन जल में अपनी छाया डालता मंथर गति से आगे बढ़ रहा है। चारो ओर शिकारों के झुंड के झुंड हंसों के समान जल में कुलेल कर रहे हैं। देखिये वह फूलों से लदी नाव आपके शिकारे से आकर लग गई तथा साथ-साथ तैरने लगी। काश्मीर तो फूलों का घर ही ठहरा। आप जो फूल पसन्द करेंगे, तुरन्त उसका गुच्छा आपके हाथों की शोभा बढ़ाने लगेगा। चाहे इन्हें केशों में गूंथिये या कोट के कालर में लगाइये, आपकी मर्जी। फूल वाला आपसे कुछ पैसे लेकर तथा अपनी वाक्पटुता से आपका दिल खुश करके नये खरीदार की खोज में अपना रास्ता पकड़

लेगा। फूलवाले को जाते देर नहीं कि फलों से भरी नाव आपके शिकारे से गठबन्ध जोड़ लेगी। भला कश्मीर के फलों को देखकर मुंह में पानी न आ जाय तो बात। फिर वही मोल-तोल और आपकी जेब कुछ और हल्की करके फलवाला भी अपनी राह लेगा।

यहां की सभी झीलों में आपको काश्मीर की खास चीज के दर्शन मिलेंगे जिन्हें 'तैरते खेत' के नाम से पुकारते हैं। टहनी और घास की एक चटाई जैसी बना लेते हैं उसके ऊपर मिट्टी की एक तह डाल कर फिर ऊपर एक चटाई डाल देते हैं। उसे पानी में तैरा देते हैं। बस खेत तैयार हो गया। इसे लम्बे बांसों से झील की तह में गाड़ देते हैं तथा जब कहीं ले जाना हो तो खे कर ले जाते हैं। उनपर अधिकतर तरकारियां एवं फल पैदा किये जाते हैं। इस प्रकार से जमीन की कमी को किसी हद तक पूरा करने की कोशिश की गई है। शायद संसार के किसी भाग में इस तरह के खेत नहीं मिलेंगे।

दूर से, गगरीबल झील के मध्य में स्थित 'नेहरू पार्क' में जलने वाले बिजली के लट्टुओं की छटा तो देखते ही बनती है। उसका झिलमिल प्रकाश जल में दूर तक मोती की लड़ियां पिरो रहा है। यह पार्क एक कृत्रिम द्वीप पर बनाया गया है। यहाँ एक सुन्दर रेस्तरां का भी इन्तजाम है। तैरने का भी अच्छा प्रबन्ध है। दूर शंकराचार्य की पहाड़ी पर जलने वाला प्रकाश भी कितना लुभावना लगता है।

कुछ देर 'नेहरू पार्क' की सैर कर शिकारा डल गेट की ओर मुड़ जायगा। थोड़ी देर बाद आप अपने को झेलम के वक्षस्थल पर तैरते पायेंगे।

आम तौर से शाम का समय शिकारों में सेवेन ब्रिजेज की सैर करने में भी बिताया जा सकता है। श्रीनगर में झेलम के ऊपर आठ पुल बने हुए हैं, जिनमें कुछ लकड़ी के हैं तथा अन्य पक्के। इन पुलों के नाम काश्मीर की महान् आत्माओं के साथ सम्बन्धित हैं। जैसे हब्बा कदल यहां की मशहूर कवयित्री हब्बा खातून के नाम पर है। फतेह कदल एवं जैनाकदल क्रमश: फतेह खां तथा जैनुलआबदीन "बड़शाह" के नाम से सम्बन्धित हैं आदि। पहले अमीरा कदल प्रथम पुल था परन्तु अब उससे भी पहले एक नया पुल और बन गया है। अमीरा कदल के पास ही सरकारी अजायबघर है। जहाँ काश्मीर के ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक चिन्ह सुरक्षित हैं। बहाव के साथ-साथ आगे बढ़ने पर दोनों ओर बस्ती घनी होती जाती है। घाटों पर ऊंचे-ऊंचे लकड़ी के मकान बने हैं। जिन पर दुकानों के साइन बोर्ड लगे हैं। यह केवल दुकानें ही नहीं वरन् कारखाने भी साथ-साथ हैं जिन्हें देख कर यहाँ के कारीगरों की कार्य कुशलता एवं मिहनत का अन्दाजा लगाया जा सकता है।

बीच-बीच में नगर के भीतरी भागों में जाने के लिए गलियाँ हैं जिनकी सीढ़ियों पर छोटे-छोटे बच्चे नहाते तथा औरतें कपड़े धोती दिखाई देती हैं। गोरे-गोरे बच्चों के फूल जैसे हंसमुख

चेहरे, सेब जैसे लाल-लाल गाल और भूरी-भूरी मुस्कुराती आँखें हर जगह आपका स्वागत करेंगी। आपको देखकर इनका हाथ तुरन्त सलाम करने की मुद्रा में उठ जायगा और दूसरा हाथ याचना के हेतु फैल जायेगा। उनका यह निरीह भोलापन देख कर हृदय ग्लानि से भर जाता है। काश! यह समझ पाते कि अंग्रेजों का जमाना लद चुका और अब प्रत्येक कश्मीरी स्वतन्त्र भारत का सम्मानित नागरिक है और उस सम्मान की रक्षा करना उनका फर्ज है।

श्रीनगर की जनसंख्या का बहुत बड़ा भाग झेलम के दोनों किनारों पर नावों में रहता है। हाउस बोट रखना, शिकारा या नौका द्वारा माल ढोना ही इनका पेशा है। इनकी नावों के दो भाग होते हैं। एक भाग खाना बनाने आदि के काम में आता है, दूसरे में निवास स्थान होता है। ये लोग इन्हीं नौकाओं में पैदा होते हैं, जीवन बिताते हैं और संसार का त्याग भी करते हैं। शिकारे में बैठ कर चारों ओर आप इनका अवलोकन कर सकते हैं।

आपका शिकारा आगे बढ़ रहा है। अनायास किसी नाव की खिड़की से चांद जैसा सुन्दर चेहरा झांक कर ओट में छिप जायेगा। किसी ओर एक गोरा हाथ नदी से बर्तन में जल भर कर बिजली की कौंध के समान लुप्त हो जायगा। किसी नाव की छत पर खड़े बच्चों का झुंड शिकारे पर बैठी किसी महिला को देखकर—'मेम साहब सलाम', 'मेम साहब सलाम' कह कर चिल्ला

उठेगा। और आपका शिकारा इन सभी दृश्यों पर दृष्टिपात करता मंथर गति से सभी पुलों की सैर करा कर वापस लौट आयेगा।

श्रीनगर के बाजारों में अमीरा-कदल के दोनों ओर का बाजार अच्छा है। उसमें भी लालचौक का हिस्सा बहुत महत्वपूर्ण है। महाराजगंज का बाजार पुराना है परन्तु यहां की बहुत बड़ी मंडी है। अन्य बाजारों में रेसीडेन्सी रोड, बंड, हरिसिंह हाई स्ट्रीट तथा माईसूमा मुख्य है। पुराना श्रीनगर बहुत गंदा एवं घना बसा है। मगर आजकल गोगजी बाग, बर्जला, बदामीबाग, रामबाग कर्णनगर आदि बस्तियां बस गई हैं जो कि स्वच्छ एवं आकर्षक हैं। परन्तु सिनेमा घर एक भी अच्छा नहीं है।

अन्य घूमने योग्य पार्कों में प्रताप पार्क, गांधी पार्क, गगरीबल पार्क, लालमंडी पार्क, म्युनिस्पल पार्क, न्यू काश्मीर पार्क तथा उस्मान जनाना पार्क सुबह शाम समय बिताने के अच्छे स्थान हैं। झेलम के किनारे बंड पर शाम को खास तौर से प्रायः संसार के सभी भागों के सौन्दर्य का क्रीम छलकता नजर आयेगा। श्रीनगर में गाल्फकोर्स भी है। तैरने के लिये डल एवं नगीन लेक में सुन्दर प्रबन्ध है। यहां कई क्लब हैं जिनमें अस्थायी सदस्यता सदा सभी के लिये खुली रहती है तथा समय आसानी से बिताया जा सकता है।

★

५./गुलमर्ग के अंचल में

श्रीनगर घूम लेने के बाद आपके सामने तुरन्त यह प्रश्न उठेगा कि अब किधर बढ़ा जाय, क्योंकि काश्मीर घाटी तो सौन्दर्य की खान है न। और काश्मीर पहुँचते ही सबसे पहले आपका ध्यान सौन्दर्य की रानी गुलमर्ग की ओर जायगा। आजादी के पहले तो यहां भारतीयों की पहुँच भी कठिन थी। गुलमर्ग स्वयं तो सुन्दर है ही परन्तु इसे केन्द्र मानकर कई आकर्षक स्थानों की सैर की जा सकती है। इसलिये कम-से-कम एक सप्ताह रुकने का प्रोग्राम बनाकर ही जाना चाहिये। श्रीनगर से बाहर जाने के लिये सरकारी बसों का सुन्दर प्रबन्ध है मगर बहुत से सैलानियों को इस बात का पता नहीं रहता कि प्राइवेट बसों द्वारा भी दर्शनीय स्थानों को देखा जा सकता है, जिनका अड्डा लाल चौक के समीप है। सरकारी बसों में आम तौर से बहुत भीड़ रहती है जिस कारण कई दिन पहले ही सीट बुक

करानी पड़ती है। ऐसी दशा में प्राइवेट बसों का सहारा लेना अच्छा होगा।

तो चलिए गुलमर्ग चलें। सबेरे के साढ़े सात बजे हैं। काश्मीर में सुबह भी देर से होती है और शाम भी। अभी सूरज में तीखापन नहीं आया है मगर बादलों के काले सफेद झुंड, दौड़ते-भागते रश्मियों से आँख मिचौनी खेल रहे हैं। दूर हिमाच्छादित पर्वत शिखरों पर किरणों मचल रही हैं। बस तीव्र गति से बढ़ी जा रही है। श्रीनगर छोड़ते ही मन को लुभावने दृश्य अपनी ओर आकर्षित करने लगते हैं। नेत्र बरबस टंगे रह जाते हैं। बायीं ओर मचलते हुए झरने तेजी के साथ कलकल निनाद में मस्ती का सन्देश सुनाते भागे जा रहे हैं। लहरों का पत्थरों से टकाराना, थिरक-थिरक कर फिसलना, फिर चंचल गति से आगे बढ़ जाना, नृत्य करती हुई सुन्दरी के नूपुरयुक्त पदचापों की चंचल गति से निकलने वाली झंकार की याद दिलाते हैं। साथ ही चारों ओर चीड़ एवं देवदारू के ऊँचे सुन्दर वृक्षों से खिलवाड़ करती हवा का सर-सर शब्द नृत्य के आकर्षण को द्विगुणित करने वाले वाद्य यंत्रों का कार्य संपादन करता है। सड़क के दोनों किनारों पर लगे वृक्षों की कतार, उसके बाद ऊँची-नीची क्यारियों के समान खेत, जिनमें काश्मीरी किसान युवक एवं युवतियाँ कंधे-से-कंधा मिला कर मेहनत करते नजर आयेंगे। घुटनों तक पानी से भरे खेतों में खड़ी सुन्दर युवतियाँ जल में कमल के समान दृष्टिगोचर होती हैं। जिधर

देखिये, सफेदे के ६०–७० फीट ऊँचे वृक्ष मस्ती से हवा में झूमते नजर आवेंगे। झील या नदियों के किनारे पानी के बीच में खड़े बेद के वृक्ष काश्मीर की अपनी चीज है। बस बढ़ रही है तेजी के साथ। आप आत्मविभोर होकर चकित नेत्रों से प्राकृतिक छटा का रसपान कर रहे हैं। और लीजिये, श्रीनगर से पचीस मील दूर 'टंगमर्ग' पहुँच कर बस अड्डे पर रुक गई। आगे चार मील रास्ता पैदल या टट्टुओं पर तय करना होगा। बस से उतरते ही टट्टू वाले आपका स्वागत करेंगे। यों तो पैदल भी जाया जा सकता है। मगर यहां आकर टट्टुओं पर चढ़ने का लोभ संवरण नहीं किया जा सकता। झुंड-के-झुंड सैकड़ों टट्टुओं को एक साथ सर्पाकार पहाड़ी भागों पर चढ़ते देख कर बड़ा मज़ा आता है। मगर एक बात का ध्यान रखना बहुत जरूरी है। वह यह कि साड़ी पहन कर टट्टुओं पर चढ़ना बहुत कठिन है, इस अवसर के लिए सलवार ही उपयुक्त है। यहां तो अधिकतर युवतियां फुलपैंट तथा शर्ट पहने दिखाई देंगी; क्योंकि यह पोशाक टट्टू की सवारी के लिए सबसे अधिक आराम देह है। रास्ते में चीड़, देवदारू, जैतून, बलूत, शहतूत, अखरोट आदि के वृक्ष झूम-झूम कर सैलानियों का स्वागत करेंगे। जैसे माता अपने अंचल की ओट में किलकारियां मारने वाले शिशुओं को देख कर प्रसन्नता से प्रफुल्लित हो झूमने लगती है।

पहाड़ी स्थानों का सबसे मजेदार अनुभव है टट्टू की सवारी। औरत, बच्चे, बूढ़े तथा जवान कोई भी इसका मजा लेने से बाज

नहीं आते। परन्तु जैसे मनुष्यों में श्रेणियां होती हैं, वैसे ही टट्टू भी तेज और बुद्धू दोनों ही प्रकार के होते हैं। अब यह आपकी किस्मत पर है कि कैसा टट्टू पल्ले पड़ा। कुछ टट्टू तो इतने बोदे होते हैं कि चाहे कितनी भी मार पड़े वह अपनी धीमी रफ्तार से बाज नहीं आयेंगे। मगर हाँ, उन्हें रास्ते की बहुत जबर्दस्त पहचान है। बिना भूले-भटके वह आपको गन्तव्य स्थान पर पहुँचा देंगे। यही कारण है कि टट्टू वाल आम तौर से टट्टू आपके हवाले करके बड़े इत्मीनान के साथ "शार्टकट" पकड़ कर आपसे जल्दी ऊपर पहुँच जायेंगे। आप टट्टू के पीठ पर हिचकोले खाते चले जा रहे हैं। डरिये नहीं, इधर-उधर चारों ओर बिखरी प्राकृतिक छटा का रसपान करते जाइये। टट्टू आपको गिरायेगा नहीं। नाक की सीध में लीक पकड़ कर बढ़ता ही चला जायगा। यहाँ पर वही तो आपका एकमात्र दोस्त और हमसफर है। उसका निरीह भोलापन ही वास्तव में उसकी महानता है। देखिये बगल से एक झरना तेजी के साथ बह रहा है। टट्टू का प्यास लगी है और कुछ क्षण रुककर उसने अपने मन को शीतल जल से शांत कर लिया। आप भी उतर कर, स्वच्छ एवं शीतल जल से तन-मन को तृप्त कर डालिये। फिर यह सुस्वादु अमृत तुल्य जल कहां मिलेगा।

टट्टू की पीठ पर बैठे आप ऊपर की ओर चढ़ते जा रहे हैं। एक ओर ऊंचे पहाड़ तथा दूसरी ओर नीची खाई। बीच में पतली पगडंडी सर्प के समान निश्चिन्त लेटी है। दूर-दूर तक घाटी का दृश्य, जिसकी दूसरी ओर बर्फ से ढंके पहाड़ मूक ध्यानस्थ

तपस्वी के समान दिखाई दे रहे हैं। घने वृक्षों के मध्य से सूर्य की किरणें छन-छन कर धरती का चुम्बन कर रही हैं। रंग-बिरंगे पक्षी डालियों पर फुदककर आपका मनोरंजन कर रहे हैं। तृणों की ओट से झांकते हुए पहाड़ी पुष्पों के समूह ऊंगलियां उठा-कर आपको बुला रहे हैं। ऐसा ज्ञात होता है मानो नन्दन-कानन स्वर्ग से पृथ्वी पर ही उतर आया है। प्रकृति के इतने रोचक वातावरण में भला आत्मविभोर हुए बिना आप कैसे रह सकते हैं। भूल जाइये दिल्ली और गया की जलाने वाली गर्मी को, जिन्दगी को निर्जीव मशीन के समान अप्राकृतिक गति में ढालनेवाली सभ्यता को, अपने और पराये के भेद को, लोभ-मोह एवं सांसारिक वासना को, आपसी तू तू, मैं-मैं को, और हृदयंगम कर लीजिये यहां चारों ओर बिखरे हुए नैसर्गिक सुख को जिसकी कल्पना में संसार की महान् आत्माओं ने समस्त जीवन दे डाला। यहां तो केवल निश्छल प्रेम एवं निस्वार्थ सेवा की भावना ही पनप सकती है। प्रकृति का कण-कण मानवता को यही सन्देश तो सुनाया करता है। गायन करते झरनों का स्वर यही तो गुनगुनाता रहता है कि थके हारे क्लांत पथिकों की प्यास बुझाना ही हमारे जीवन की सार्थकता है। फलों से लदे छायेदार वृक्ष यही संदेश देते हैं कि दूसरों की क्षुधा तृप्ति तथा दो क्षण विश्राम करने का अवकाश प्रदान करना ही जीवन का ध्येय है। निरीह टट्टू यह उदाहरण पेश करता है कि अपनी पीठ पर बोझ उठा कर भी दूसरों को जीवन पथ में आगे बढ़ने में सहायता प्रदान करना सबसे बड़ा कर्त्तव्य है।

और वह देखिये, गुलमर्ग के होटलों की कनार दूर से ही झलकने लगी। यह स्थान ८५०० फीट की ऊंचाई पर गुलमर्ग (फूलों का मार्ग) के नाम से प्रसिद्ध है। यहां पहुँचते ही आपको पहाड़ों की गोद में सुन्दर, मखमली घास के मैदान दिखाई देंगे। यहां का "गोल्फ लिंक" एशिया में सबसे उत्तम माना जाता है। घुड़सवारी के लिये तो यह जगह बहुत ही मजेदार है। आस-पास में ट्राउट मछलियों के शिकार के लिये अच्छा इन्तजाम है। परन्तु गले के हार के समान गुलमर्ग को चारों ओर से घेरने वाली सात मील लंबी ठंडी सड़क पर टहलने का आनन्द तो अवर्णनीय है। देवदारू के वृक्षों के अंचल मे छिपी हुई इस सड़क से हरमुख पर्वत तथा नंगा पर्वत का दृश्य देखने ही योग्य है।

गुलमर्ग से तीन मील दूर तथा १०,००० फीट की ऊँचाई पर स्थित खिलनमर्ग भी दर्शनीय स्थानों में एक है। यहां से काश्मीर घाटी का दृश्य बहुत सुन्दर दिखाई देता है। बर्फ से ढंके पहाड़ों की ढलानों पर "स्कीइंग', तथा "स्लेजिंग" का आनन्द उठाया जा सकता है। झुंड के झुंड औरतें, बच्चे और जवान स्लेज गाड़ियों पर फिसलते एवं शोर मचाते नजर आयेंगे। कहीं सैलानियों के झुंड बर्फ की गेन्द बना कर एक दूसरे पर फेंकते दिखाई देंगे। इन स्थानों पर खाने की चीजें साथ लाना कभी न भूलना चाहिये।

खिलनमर्ग के बाद 'अफरावट' और 'अलपत्थर' की जमी हुई झील को देखना कभी न भूलें। यहां से पांच मील की दूरी पर यह स्थान है एवं पैदल तथा टट्टू के द्वारा पहुँचा जा सकता है।

'अफरावट' झील में तैरते हुए हिमखण्डों का दृश्य बहुत ही सुन्दर प्रतीत होता है। गुलमर्ग से केवल पांच मील दूर निंगल नाला मिलेगा जिसकी धार बहुत तेज है। पाइन के वृक्षों की छाया में सारा रास्ता बहुत आराम से कट जाता है। फिरोज पुर नाला भी ट्राउट मछलियों के शिकार के लिये प्रसिद्ध है।

तोस मैदान काश्मीर के मार्गों में बहुत सुन्दर माना जाता है। यहाँ भी टट्टू का सहारा लीजिये, क्योंकि चढ़ाई अधिक कठिन है। परन्तु जंगलों और मार्गों के बीच से गुजरते समय आप सारी व्यथा भूल जायेंगे। यहाँ पहुँचने के तीन रास्तों में से कोई भी चुन लीजिये। फिरोजपुर नाला सदा आपका साथ देगा।

बाबा ऋषि भी पिकनिक के लिये उत्तम स्थान है तथा गुलमर्ग से केकल तीन मील की दूरी पर है। कान्तरनाग भी दर्शनीय स्थान है।

गुलमर्ग से दस मील दूर स्थित लियनमर्ग भी देखने योग्य है। रास्ता पाइन के मन लुभावने जंगलों के मध्य से गुजरता है। एक दिन में ही यहां से लौट कर आ सकते हैं।

गुलमर्ग अपने होटलों के लिये प्रसिद्ध है। यहां टूरिस्ट हटों का भी प्रबन्ध है। सरकारी कल्ब व अस्पताल भी है। डाक-तार घर एवं बाजार की सुविधाएं भी प्राप्त हैं। इन्हीं सब कारणों से गुलमर्ग का आकर्षण अपना अलग महत्व रखता है।

★

६. लिद्दर की घाटी में

श्रीनगर भी देखा तथा गुलमर्ग भी। इसके बाद? काश्मीर के सुन्दर स्थानों में पहलगाँव का भी अपना विशिष्ट स्थान है। आपका हृदय अनायास ही इसकी ओर आकर्षित हो जायगा। श्रीनगर से प्रतिदिन कई सरकारी एवं गैरसरकारी बसें वहाँ जाती हैं। साठ मील की दूरी ढाई घंटे में आसानी से कट जाती है। तो चलिये पहलगाँव चलें। श्रीनगर अड्डे को छोड़ते ही बस पूर्वपरिचित श्रीनगर जम्मू रोड पर झेलम के किनारे दौड़ने लगती है। रास्ते में पाम्पुर के केसर के खेतों और अवन्तीपुर के खंडहरों को पार करती हुई बस खन्नाबल पहुँचती है। यहाँ से बस मुड़ जाती है। और थोड़ी देर बाद अनंतनाग पहुँच गये। यहाँ एक अच्छा खासा बाजार एंव व्यापार का केन्द्र है। एक चश्मा भी है जहाँ हिन्दुओं का एक मंदिर बना हुआ है। बस यहाँ से और आगे बढ़ेगी तो थोड़ी देर बाद मटन पहुँच जाते हैं जिसे

भवन भी कहते हैं। यह बहुत ही प्रसिद्ध तीर्थ-स्थान है। इसकी तुलना यहाँ के लोग काशी, प्रयाग तथा गया से करते हैं। बस से उतरते ही पंडो की भीड़ आपको घेर लेगी। यहाँ सूर्य देव का मंदिर है। साथ ही एक चश्मा है जिसका जल स्वादिष्ट एवं ठंडा है। चश्मे को तालाब का रूप दे दिया गया है जिसमें सुन्दर मछलियों के झुंड किलोल करते रहते हैं। श्रद्धालु भक्तगण उन्हें खाना देते नजर आयेगें। मछलियाँ बेधड़क हाथ के पास आकर खाना निगल जाती हैं। मंदिर के साथ ही चिनार का बाग भी लगा हुआ है जिसकी शीतल छाया में विश्राम करना सुखकर मालूम होता है।

परन्तु मार्तण्ड के भव्य मन्दिर के खंडहर यहाँ से करीब दो मील की दूरी पर एक पहाड़ी पर स्थित हैं। इसकी विशालता एवं सौन्दर्य का अंदाजा बिना देखे नहीं लगाया जा सकता। यहाँ के स्मारक चिन्हों में यह सर्वश्रेष्ठ माना जा सकता है। बस सर्पाकार टेढ़े-मेढ़े रास्तों पर आगे बढ़ रही है। सड़क के दोनों ओर प्राकृतिक सौन्दर्य मन को मोह लेता है। कहीं चिनार तथा अखरोट के वृक्षों की कतार मिलेगी, तो कहीं फलों के बगीचे। कहीं चावल के खेत तो कहीं उछलते कूदते पहाड़ी झरने। बीच में छोटे-छोटे गाँव जहाँ सड़क के किनारे खेलते सुन्दर बच्चों के झुँड अथवा दिनचर्या में रत ग्राम्य बालाओं की झलक मिलेगी। रास्ते में खानाबदोश गूजरों के परिवार टट्टुओं पर अपना समस्त संसार ढोते हुए तथा घंटियों की टुन-टुन ध्वनि का गुंजार करते

सैकड़ों-भेड़ों के झुँड काफी समय तक रास्ता रोक लेते हैं। मटन के बाद लिद्दर की धारा आपका साथ देने लगती है। पहाड़ों के बीच से तेजी के साथ बहता हुआ पानी, जिसका कल-कल नाद कर्ण कुहरों में अमृत घोल देता है। इसमें ट्राउट मछली पकड़ने का सुन्दर प्रबन्ध है। धीरे-धीरे ऊँचाई बढ़ती जाती है। लीजिये एशमुकाम और टिकर भी पीछे छूट गये। चारो ओर दृश्य उतने ही प्रभावशाली हैं कि बस में बैठे हुये बम्बई के कुछ स्कूली छात्रों ने "माउथ आर्गन" पर फिल्मी धुनें और अंग्रेजी गान प्रारंभ कर दिये। बस बढ़ी जा रही है। थोड़ी देर बाद पहलगाँव का नजारा दिखाई देने लगा। अब आप ७,००० फीट की उँचाई पर हैं। बास अड्डे पर आकर रूक गई। अड्डे के समीप ही टूरिस्ट ब्यूरो का ऑफिस है तथा डाक-तार-घर का प्रबन्ध है।

जिस तरह श्रीनगर में रहने का आनंद हाउस-बोटों में है, उसी प्रकार यदि पहलगाँव में रहने का वास्तविक आनंद उठाना हो तो तम्बू में ही रहना चाहिये। बलखाते, उछलते, कूदकते, छटपटाते, चहकते, मचलते लिद्दर की मस्त लहरों के किनारे सैकड़ों तम्बू राजहंसो के झुँड के समान बरबस सैलानियों का ध्यान खींच लेते हैं। यहाँ अंग्रेजी तथा भारतीय ढंग के कई होटल भी हैं। यों होटल जीवन की सुविधा तो संसार के सभी स्थानों में मिल सकती है परंतु तम्बू जीवन का मजा तो बस अलग ही चीज है। इसलिये लूट लीजिये यह मजा, फिर शायद मौका हाथ न आये।

एक तम्बू वाले से बात तय हुई। कुलियों ने सामान उठाया और हम चल दिये। पहलगाँव में एक बहुत ही साफ-सुथरी पक्की सड़क है जिसके दोनों ओर हर प्रकार की दुकानों तथा होटलों की भरमार है। यह स्थान खास तौर से भारतीय पर्यटकों को बहुत पसंद है। इसलिये यहाँ भीड़ भी अधिक रहती है। पत्थर के बड़े-बड़े ढोकों की ओट में लिद्दर यहाँ कई शाखाओं में विभक्त हो जाता हैं जिस कारण इस स्थान की शोभा बहुत बढ़ जाती है। मस्ती में हहराती लहरों के किनारे एक पार्क तथा क्लब बना हुआ है, जिसमें बच्चों के खेलने तथा बैडमिंटन का भी प्रबंध है। पास में ही हिमाच्छादित गगनचुम्बी चोटियों के मनमोहक दृश्य हैं। पर्वत के निचले भागों में पहाड़ी वृक्षों की कतारें तथा पुष्पों के झुंड के सौन्दर्य का भला क्या कहना। एकांत सेवन एवं मानसिक विश्राम के लिये यह स्थान उपयुक्त है। मछली का शिकार तथा घुड़सवारी का आनंद भी उठाया जा सकता है।

तनिक अनुमान कीजिये उस दृश्य का जबकि सफेद एवं भूरे रंग के बादल रूई के गालों के समान बर्फ से ढके पर्वत शिखरों पर तैरते नजर आते हैं, ऐसा लगता है मानो मदमत्त ऐरावत मस्ती में अपनी सूँड़ हिलाता, इठलाता स्वर्ग से नीचे उतर रहा है। और बादलों के पीछे से सूर्य की रश्मियाँ झाँकती सरकती नीचे उतर कर बर्फ पर फिसलने लगती हैं तो एकदम इन्द्रधनुष की रंगीनी उभर आती है। आप लिद्दर के उफनाते हुये जल में पैर डाले किसी पत्थर के ढोंके पर बैठे हैं। सुगंधित मलय

समीर आपके तन-मन एवं प्राणों को थपकियाँ दे रहा है। जल के पत्थरों से टकराने की गूँज, लोरियों की हल्की गुनगुनाहट के समान आपके कर्ण कुहरों में अमृत उड़ेल रही है। उन अमूल्य क्षणों में प्राप्त किये गये उस अभूतपूर्व, नैसर्गिक आनंद का अनुभव व्यक्त करना किसी भी लेखक की लेखनी एवं चित्रकार की तूलिका के सामर्थ्य के परे है।

लिद्दर बह रहा है हहराता, घहराता, हँसता, इठलाता। इसने मजबूत चट्टानों के सीने को तोड़कर अपना रास्ता स्वयं बनाया है। इसने रास्ते के सारे कलुष को धोकर बहा दिया है। मार्ग का अवरोध करने वाले पत्थरों को निरंतर प्रहार से निर्मूल कर दिया है और बढ़ा जा रहा है अपने गंतव्य स्थान की ओर। क्या हम उसकी अविराम गति से कुछ भी सबक न लेगें? क्या हम संसार की बाधाओं को दूर भगाकर अपना भविष्य स्वयं नहीं बनायेगें? क्या हम अपने हृदय के कलुष को धोकर, ऊँचनीच एवं छोटे-बड़े का भेद मिटाकर मानव को 'केवल मानव' ही नहीं समझ सकेगें? क्या हम अपने सतत् प्रयास से संसार का इतिहास नहीं बदल सकेगें? मनुष्य को पशु बना देने वाली समस्त शक्तियों को समूल विनष्ट नहीं कर सकेगें? हाँ! हाँ। अवश्य कर सकेगें। हम भी अपने लक्ष्य पर पहुँचकर ही दम लेगें। यही आदर्श तो लिद्दर हमारे समक्ष पेश कर रहा है। और अनुभूति के ऐसे ही क्षणों में मेरा हृदय चित्कार उठा — तेज बहो,

और तेज बहो लिद्दर जिससे संसार की समस्त गंदगी धुल जाय तथा नव निर्माण का मार्ग प्रशस्त हो उठे ।

पहलगाँव का महत्व इसलिये भी अधिक है, क्योंकि इसे केन्द्र स्थल मानकर बहुत से दर्शनीय एवं धार्मिक स्थानों की यात्रा की जा सकती है। जिसमें सबसे अधिक महत्वपूर्ण अमरनाथ यात्रा है। असाढ़-सावन (जुलाई, अगस्त) के दिनों में यहाँ देश के सभी भागों से हजारों यात्री अमरनाथ के शिवलिंग के दर्शन हेतु एकत्रित होते हैं। पहलगाँव से प्रस्थान करने के पश्चात् आठ मील की दूरी एवं ६,५०० फीट की ऊँचाई पर स्थित चंदनवाड़ी नामक स्थान पर ठहरने के लिये रेस्ट-हाउस का प्रबन्ध है। यों तो पैदल अथवा टट्टुओं पर जाया जाता है परन्तु यहाँ तक जीप गाड़ी से भी जा सकते हैं। यहाँ तक सड़क आम तौर से लिद्दर के किनारे-किनारे ही आगे बढ़ती है। बगल में हहराता, घहराता लिद्दर और वह अकथनीय प्राकृतिक छटा। स्वप्न लोक का आनंद प्राप्त होता है। और चंदनवाड़ी पहुँचकर बर्फ के पुल का दृश्य तो अद्वितीय ही है जिसके नीचे से लिद्दर का जल उफनाता, नाचता, मचलता मस्ती से बढ़ा जा रहा है। चंदनवाड़ी से आगे पिस्सू घाटी होकर दो मील की चढ़ाई कठिन है। चंदनवाड़ी से शेषनाग झील का रास्ता सात मील लम्बा है तथा टट्टुओं से तय किया जाता है। जोजीपाल या बाभजन में ठहरा जा सकता है जहाँ यात्रियों के ठहरने के लिये शेड हैं। यहाँ से नीचे घाटी का सम्पूर्ण दृश्य बहुत ही मनोहारी प्रतीत होता है। लिद्दर एक चाँदी की

लकीर के समान दृष्टिगोचर होता है तथा पहलगाँव के होटलों एवं यात्रियों के टेंटों का दृश्य देखते ही बनता है। शेषनाग झील ११,७३० फीट की ऊँचाई पर स्थित है जिसके चारों ओर हिम मंडित शिखरों की छवि देखने योग्य है। लिद्दर का स्रोत भी यही झील है। शेषनाग से पंचतरनी तक सात मील टट्टुओं से तय करने योग्य रास्ता है। परन्तु चढ़ाई बहुत ही कठिन है और १४,७०० फीट की उँचाई पर महागुनस दर्रे को पार करना पड़ता है। यहाँ चारों ओर केवल बर्फ ही बर्फ दिखाई देती है तथा एक भी वृक्ष नजर में नहीं आता। फिर करीब पाँच मील तक ढाल है। पंचतरनी में ठहरने के लिये शेड है । पंचतरन से अमरनाथ केवल पाँच मील दूर है। रास्ता और भी अधिक कठिन है। अमरनाथ पर्वत १८,००० फीट ऊँचा है तथा उसकी बाईं ओर अमरगंगा बहती है जिसमें भक्तगण स्नान करते हैं परन्तु कंदरा की ऊचाई १२,७२६ फीट है। इस कंदरा की लंबाई करीब १०० फीट, गहराई १२५ फीट तथा ऊँचाई ३० फीट है। कंदरा के भीतर ऊपर से पानी टपकता रहता है। तथा पूर्णिमा के दिन स्वनिर्मित प्रतिमा बन जाती है जो कि चन्द्रमा के आकार के साथ घटती बढ़ती रहती है। इस स्थान पर पहुँचकर असीम शान्ति तथा आनंद का अनुभव होता है। यहाँ कबूतर का एक जोड़ा भी देखा जाता है। पुराणों मे यह कथा है कि शंकर ने पार्वती को अमरत्व प्राप्त करने का रहस्य इसी स्थान पर सुनाया जिसे इसी कबूतर के जोड़े ने भी सुन लिया और यही कारण है कि यह

जोड़ा अमर हो गया। ध्यान देने योग्य बात यह है कि पहाड़ों की यात्रा में विशेष प्रकार के घास के बने जूते तथा नोक वाली लोहे की क्षणी बहुत सहायक सिद्ध होती है।

पहलगाँव से कोलाहाई ग्लेशियर की यात्रा भी साहसपूर्ण परन्तु मजेदार है। सात मील की दूरी पार करने के बाद ९,०२० फीट की ऊँचाई पर आड्डू नामक स्थान है। जहाँ लिद्दर घाटी का दृश्य देखने ही योग्य है। यहाँ ठहरने के लिये हटों का इन्तजाम है। आड्डू से लिद्दरवट तक की दूरी सात मील है, ऊँचाई करीब १०,००० फीट है। यहाँ भी हट का प्रबन्ध है तथा तम्बू भी लगाये जा सकते हैं। लिद्दर-वट से कोलाहाई की दूरी आठ मील है। इस ग्लेशियर की ऊँचाई १४,००० फीट से अधिक है। जहाँ कैम्प लगाया जा सकता है। पहलगाँव से यहाँ तक टट्टुओं से पहुँचा जा सकता है। यात्रा दो दिनों में समाप्त होती है।

पहलगाँव से तारसर तथा मारसर झील की यात्रा भी की जा सकती है। जो कि क्रमशः १२,४५० तथा १२,५३० फीट की ऊँचाई पर स्थित है। यहाँ तम्बू भी लगाये जासकते हैं तथा मार्ग टट्टुओं द्वारा तय किया जाता है।

पहलगाँव से सोनामार्ग की यात्रा भी की जा सकती है जोकि सिंध-घाटी में स्थित है। पहलगाँव से सात मील दूर पहला पड़ाव आड्डू में पड़ेगा। यहाँ ठहरने की उपयुक्त सुविधा है। आड्डू से लिद्दरवट पुनः सात मील का फासला है जहाँ टूरिस्ट हटों का

प्रबन्ध है। लिद्दरवट से छः मील दूर एवं ११,२५० फीट की ऊँचाई पर सखवास नाला मिलता है। सखवास से खेमसर सात मील दूर है तथा रास्ते में १३,५०० फीट की ऊँचाई पर यमेहर दर्रे को पार करना पड़ता है। इसके बाद ढाल प्रारंभ होती है जो कि आसान है। खेमसर से नौ मील आगे कुलान नामक स्थान आता है जहाँ से सिंध-घाटी में प्रवेश प्राप्त हो जाता है। कुलान केवल ७,३०० फीट की ऊँचाई पर है। यहाँ सुहावने जंगलों को पारकर सिंध नदी के किनारे पहुँचते हैं एवं कुलान पुल को पार करते हैं। कुलान से सोनमर्ग केवल दस मील है तथा रास्ता भी सुगम है। इस स्थान की ऊँचाई ८,७५० फीट है। अब तो सोनमर्ग जाने के लिये श्रीनगर से सीधी सड़क बन गई है तथा बस सर्विस भी चालू है।

७. सिंध-घाटी की गोद में

सिंध-घाटी के दर्शनीय स्थानों में कई झीलों का नाम आता है। उनमें से गंगाबल झील एक है। हरमुख पर्वत की तलहटी में तथा ११,७२० फीट की ऊँचाई पर स्थित यह झील सबसे बड़ी झीलों में गिनी जाती है। यह हिन्दुओं का पवित्र तीर्थ स्थान माना जाता है एवं अगस्त में लोग यहाँ की यात्रा करते हैं। श्रीनगर से गांडरबल तक बारह मील की दूरी मोटर से तय की जाती है। गांडरबल के पश्चात् अगला पड़ाव तेरह मील दूर वागनट नामक गाँव में पड़ता है जोकि ६,८०० फीट की ऊँचाई पर है। इस गाँव से तीन मील दूर दो प्राचीन मन्दिरों के भग्नाव शेष देखने योग्य है। वागनट से गंगाबल की दूरी चौदह मील है। १०,८०० फीट तक सीधी चढ़ाई चढ़नी पड़ेगी। बीच में नौ मील की दूरी पार करने पर यात्रियों के ठहरने के लिये हटों का प्रबंध है। दूसरे दिन यहाँ से गंगाबल की यात्रा करके पुनः

यहाँ वापस लौटा जा सकता है। श्रीनगर से ५१ मील दूर सोन-मर्ग पहुँचकर थाजीवास ग्लेशियर के दर्शन भी हो सकते हैं। विष्नासर तथा कृष्णासर झीलों के दर्शन हेतु सोनमर्ग से शीतकारी ब्रिज होकर ८ मील की दूरी पर निचनाई पहुँचते हैं। यहाँ से झीलों की दूरी केवल आठ मील रह जाती है। झील १२,५०० फीट की ऊँचाई पर स्थित है। यहाँ पानी तथा जलावन बहुतायत से प्राप्त है।

अलपत्थर झील भी सिंध-घाटी में ही है जो कि खिलनमर्ग से पाँच मील दूर है। रास्ता टट्टुओं के द्वारा तय किया जाता है। इसका जल नीले रंग का है तथा दृश्य बहुत ही लुभावना है।

गुलमर्ग से तोश मैदान पाँच दिनों की वापसी यात्रा में देखा जा सकता है। फिरोजपुर नाला होकर यहाँ पहुँचने के तीन मार्ग हैं। पहला मार्ग दनवास तथा तेजन होकर तोश मैदान पहुँचता है। दूसरा गुलमर्ग से खाग (१४ मील) खाग से रियार (४ मील) तथा रियार से (८ मील) तोश मैदान पहुँचता है। तीसरा मार्ग यह है कि दनवास और तेजन होकर जाया जाय तथा खाग और रियार होकर वापस पहुँचा जाय।

गुलमर्ग से लियन मर्ग भी दस मील दूर है तथा एक दिन में लौटा जा सकता है।

नीलनाग ६,८०० फीट ऊँचाई पर होते हुये भी एक गर्म पानी की झील है यह वास्तव में आश्चर्य का विषय है। श्रीनगर से यहाँ पहुँचने के दो मार्ग हैं तथा दो दिनों का रास्ता है। एक मार्ग

नगम होकर है जिस पर बारह मील तक मोटर जा सकती है। आगे आठ मील होपलू, ब्रजन तथा गोगजी पथरी होकर जाते हैं। दूसरा मार्ग च्रार तथा युसमर्ग होकर जाता है। युसमर्ग तक मोटर के योग्य सड़क है। नीलनाग में ठहरने के लिये रेस्ट हाउस का प्रबंध है। गर्म पानी की झील होने के कारण उसमें तैरने में बड़ा आनंद आता है।

श्रीनगर से कौंसर नाग झील की पाँच दिनों की यात्रा भी बड़ी मजेदार है। शुपैयाँ तक ३४ मील का रास्ता मोटर द्वारा तय किया जाता है। यहाँ से आगे बढ़ने पर रास्ते में अहरबल जल प्रपात के दर्शन होते हैं। दृश्य इतना सुन्दर है कि मन हटना ही नहीं चाहता। ग्यारह मील की दूरी पर कुंगवट्टन पहुँचने पर ठहरने के लिये रेस्टहाउस का प्रबंध है। यहाँ से आठ मील दूर तथा १२,००० फीट की ऊँचाई पर यह झील स्थित है। पीर पंजाल की चोटियों ने इसे चारों ओर से घेर रक्खा है तथा इसका जल बहुत ही ठंडा एवं नीले रंग का है। झील के पास ही हटों का प्रबंध है। खाने पीने का सामान श्रीनगर से ही ले लेना चाहिये। यद्यपि टट्टुओं का इन्तजाम शुपैयाँ में हो जायगा।

श्रीनगर से वूलर झील की यात्रा भी एक दिन में ही बस द्वारा समाप्त की जा सकती है। वाटलब नामक स्थान से झील का दृश्य मन को बरबस मोह लेता है। शांत नील जल के वक्षस्थल पर तैरती हुई नौकाओं की मंद-मंथर गति तथा हिमाच्छादित पर्वत शिखरों की झिलमिल परछाइयाँ नेत्रों को बाँध लेती है। यह मीठे

पानी की सबसे बड़ी झील मानी जाती है। इसकी लंबाई पन्द्रह मील है तथा यह श्रीनगर से २५ मील दूर है। यों तो इसमें कमल सिंघाड़े आदि बहुत सी चीजें उगती हैं परन्तु मछलियों की यहाँ बहुतायत है। यहाँ तक कि समुद्र में पाई जाने वाली माहसीर मछली का शिकार भी यहाँ होता है। झेलम नदी वूलर झील से होकर ही पाकिस्तान की ओर अग्रसर होती है।

अँचार नामक झील भी मुर्गाबी एवं बत्तख के शिकार के लिये प्रसिद्ध है। गर्मियों में यह कमल से ढंक जाती है।

परन्तु इन सभी झीलों में श्रीनगर से १८ मील की दूरी पर स्थित मानसबल झील शायद सबसे अधिक सुन्दर है। और अगस्त में जब यह कमल दल से आच्छादित रहता है तो पास की पहाड़ी पर खड़े होकर इसकी ओर देखते हुये नेत्र कभी नहीं अघाते।

नरमर्ग भी सैलानियों के पंसद की जगह है। अलसू गाँव से ३,५०० फीट की चढ़ाई के बाद वूलर झील की ओर दृष्टिपात करता हुआ यह स्थान पाइन के जंगलों से युक्त होने के कारण गुलमर्ग की याद ताजा कर देता है। गर्मियों में एक छोटे से झरने के कारण पानी की दिक्कत नहीं होती। यहाँ भी हटों का प्रबंध है।

इधर कुछ दिनों से सैलानियों का ध्यान युसमर्ग नामक एक नये दर्शनीय स्थान की ओर अधिक जाने लगा है। पहाड़ों के मध्य यह एक छोटा-सा हरा-भरा मैदान है। श्रीनगर से यहाँ

तक २० मील का रास्ता मोटर द्वारा तय किया जाता है। यात्रियों की सुविधा के लिये यहाँ रेस्ट हाउस का प्रबंध है तथा पिकनिक के लिये यह स्थान आदर्श है। युसमर्ग से संगसफेद या चिट्टा पत्थर एवं दूध पथरी की भी यात्रा की जा सकती है। संग-सफेद, दूध गंगा नाला की एक शाखा है जो कि श्रीनगर से होकर बहता है। पानी बहुत ही ठंडा तथा पाचन के लिये गुणकारी है।

श्रीनगर से सोनमर्ग की यात्रा बहुत ही मोनमहक है, जो कि सिन्धु-घाटी में स्थित एक बहुत ही सुन्दर एवं मनोरम स्थान है। यहाँ बसों से जाने की सुविधा प्राप्त है।

८. अन्य दर्शनीय एवं पवित्र स्थान

अछाबल—

इस स्थान का वास्तविक नाम अवशवल था, क्योंकि किंवदन्ती के अनुसार इस बाग का निर्माण प्रारंभ में अवश नामक राजा ने कराया था। अछाबल शब्द उसी का अपभ्रंश जान पड़ता है। श्रीनगर-पहलगाँव रोड पर अनन्तनाग नामक स्थान से सात मील हटकर यह बाग स्थित है। यह सौंदर्य में अन्य बागों से किसी भी प्रकार कम नहीं। पहाड़ी ढ़ाल पर से एक चश्मः निकलता है उसी की धारा को नहरों में वितरित किया गया है तथा बीच-बीच में फव्वारे बने हैं। नहरों के चारो ओर बाग लगाया गया है जहाँ रंगबिरंगे फूल अपनी अवर्णनीय छटा से यात्रियों का मन मोह लेते हैं। यहाँ का पानी स्वादिष्ट और ठंडा है। छुट्टी के दिनो में कश्मीरी परिवार बहुत बड़ी संख्या में यहाँ आकर पिकनिक का आनंद लूटते हैं। बाग के चारों ओर पत्थर की दीवाल

है । लम्बाई ४६७ फीट एवं चौड़ाई ४५ फीट है । सुन्दर चिनार के वृक्ष इसके सौन्दर्य को चार चांद लगा देते हैं तथा यात्रियों को शीतल छाया भी प्रदान करते हैं ।

कुकरनाग—

अछाबल से सात मील और आगे बढ़ने पर यह चश्मा मिलता है । मुर्गे के पंजे के समान, पहाड़ की तलहटी में कई स्थानों से पानी बाहर निकलता है, शायद इसीलिये इसका नाम कुकरनाग पड़ गया है । तनिक आगे बढ़ने पर एक लकड़ी के पुल के नीचे से इस चश्मे का पानी बड़ी तेजी से पत्थरों से टकराकर आगे बढ़ता है । चारो ओर सायेदार पेड़ों के नीचे मखमली घास के मैदान पर, प्रकृति के इस शांत वातावरण में विश्राम करने में, एक अजीब सुख का अनुभव होता है । चश्मे के पानी के बारे में इतनी प्रसिद्धि है कि इससे पेट के समस्त रोग दूर हो जाते हैं। यही कारण है कि यात्री यहाँ आकर हफ्तों ठहर जाते हैं ।

बारामुला—

यह स्थान श्रीनगर से सड़क द्वारा मिला हुआ है तथा देखने योग्य है । पाकिस्तानियों के बर्बर हमलों से इसे बहुत क्षति उठानी पड़ी थी ।

रिव्रव—

श्रीनगर से बारह मील दूर पर रिव्रव नामक गाँव पड़ता है । यहाँ का ज्वालामुखी मंदिर प्रसिद्ध है । रास्ते में पड़ने वाले खोनमूह नामक स्थान में भी कई पुराने मंदिर हैं ।

क्षीर भवानी—

यह स्थान श्रीनगर से १४ मील दूर पक्की सड़क पर स्थित है। इसका दूसरा नाम तुलमुला भी है । यहाँ एक मंदिर तथा एक चश्मा भी है। इस स्थान को कश्मीरी हिन्दू बहुत ही अधिक पवित्र मानते हैं। दूर-दूर से श्रद्धालू लोग यहाँ आकर मुंडन, विवाह आदि शुभ कार्यों को सम्पन्न करते हैं। मैंने बहुत से कश्मीरी हिन्दू परिवारों को वहाँ देखा जो कि अपनी स्थानीय वेश-भूषा से सुसज्जित कश्मीरी गीतों को गा-गाकर उत्सव मना रहे थे। इनमें स्त्रियों की संख्या ही अधिक थी।

मटन अथवा भवन अपने सूर्य मंदिर के लिये बहुत पवित्र माना जाता है। कश्मीरी लोग इसकी तुलना गया, प्रयाग, मथुरा तथा काशी जैसे पवित्र स्थानों से करते हैं। इसीलिये यहाँ भी पंडों की भरमार है। यहाँ एक चश्मे को तालब का रूप दे दिया गया है जिसमें मछलियाँ बहुत हैं। यात्री इन्हें खाना खिलाते हैं। बगल में चिनार का बाग है जिससे इस स्थान की शोभा बहुत बढ़ गई है। यह स्थान श्रीनगर से चालीस मील दूर पहलगाँव जाने वाली सड़क पर स्थित है। इस स्थान के पास ही प्रसिद्ध मार्तण्ड मंदिर के खण्डहर एक ऊँचे स्थान पर स्थित हैं। वहाँ तक पैदल जाया जा सकता है। इसकी भव्यता देखने योग्य है।

वैष्णव देवी—

वैष्णव देवी—की गुफा जम्मू प्रान्त में स्थित है तथा इसकी ऊँचाई ५,३०० फीट है। इस पवित्र स्थान की यात्रा मोटर तथा

पैदल तय करनी पड़ती है। यह हिन्दुओं का बहुत ही पवित्र तीर्थ स्थान है।

पटन—

यहाँ कुछ मंदिरों के खण्डहर पाये जाते हैं। यह स्थान श्रीनगर से चौदह मील दूर बारामुला जाने वाली सड़क पर है।

पारसपुर—

यहाँ पर प्राचीन विष्णु मंदिरों के खंडहर पाये गये हैं।

पान्द्रेठन—

यहाँ का नक्काशीदार मंदिर एक तालाब के बीच में बना हुआ है तथा चिनार के वृक्षों से आच्छादित है। यह स्थान श्रीनगर से केवल चार मील दूर है।

अन्य देखने योग्य प्राचीन स्थानों में बौद्ध विहार के खंडहर भी हैं जो हारवन में स्थित हैं। यों तो कश्मीर का चप्पा-चप्पा सुन्दर दर्शनीय एवं प्राचीन स्मारकों से भरा पड़ा है। इसका वर्णन जितना भी किया जाय थोड़ा ही होगा। अब तो लद्दाख की राजधानी लेह को भी श्रीनगर से सड़क द्वारा जोड़ दिया गया है, जिससे प्राचीन बौद्ध संस्कृति के दर्शन सभी को सुलभ हो सकेंगे।

★

९ | जानने योग्य कुछ बातें

श्रीनगर मार्ग का विवरण

पठानकोट ०-मील

यात्रा आरम्भ—यहाँ इन्डियन एयर लाइन्स कार्पोरेशन तथा कश्मीर विजिटर्स ब्यूरो का दफ्तर एवं हवाई अड्डा है। श्रीनगर जाने के लिये बसें भी यहीं से मिलती हैं। कुल्लू घाटी की यात्रा भी यहीं से प्रारम्भ होती है।

लखनपुर — १४ मील

साँबा — ४१ मील

जम्मू — ६५ मील

१००० फीट—देखने योग्य स्थानों में रघुनाथ जी का मंदिर, आई० ए० सी० का दफ्तर, होटल, डाक बंगला एवं डाक तार घर, विजिटर्स ब्यूरो से संलग्न

यात्रियों के लिये ठहरने का उत्तम प्रबन्ध। इस स्थान को राज्य की शीतकालीन राजधानी होने का गौरव भी प्राप्त है।

नगरोठा— ७१·५ मील
११६५ फीट—बाजार तथा गाँव

झजर — ८४·५ मील
१६३० फीट—रेस्ट-हाउस, डाक घर

उधमपुर— १०४ मील
२३४८ फीट—डाक-तार घर, रेस्ट-हाउस, डाकबंगला होटल तथा व्यापार का केन्द्र

कुद — १२६ मील
५७०० फीट —डाकघर, होटल, रेस्ट-हाउस, डाक-बंगला

बटोट — १४१·५ मील
५११६ फीट—डाकतार घर, होटल, डाक बंगला, अस्पताल

रामबन — १५८ मील
२२५० फीट—होटल, डाक-तार घर, डाकबंगला

बनिहाल — १८२ ·५ मील

५३३० फीट—डाकघर, बाजार, रेस्ट-हाउस, डाक-बंगला। यहाँ से सात मील दूर, रास्ता जवाहर टनल से होकर गुजरता है। इसकी ऊँचाई ७२०० फीट है और हवा भी बहुत तेज चलती है। जिसके कारण ठंड बहुत लगती है। यह रास्ता बारहो महीने खुला रहेगा। टनल पार करते ही कश्मीर घाटी के प्रथम दर्शन प्राप्त होते हैं।

काजीगुंड — २२१ मील

५६६७ फीट—यह फलों का मुख्य व्यापार केन्द्र है। डाक-तार घर तथा डाक बंगला भी है।

खन्नाबल —२३४ मील

५२३६ फीट—डाक-तार घर एवं डाक बंगला। यहीं से झेलम के दर्शन प्राप्त होने लगते हैं।

अवन्तीपुर —२४६ मील

५२२५ फीट—पुराने खंडहर, डाक-तार घर।

पाम्पुर —२५६ मील

५३२५ फीट—केसर के खेत।

श्रीनगर — २६७ मील

५२१४ फीट— ...

———

कश्मीर के विभिन्न स्थानों की ऊँचाई

१.	गौडविन आस्टिन	२८२०० फीट
२.	नंगा पर्वत	२६६९६ ”
३.	हरमुख	१६८७२ ,,
४.	त्रटाकूटी	१५५२४ ,,
५.	कोलाहाई	१५००० ,,
६.	अमरनाथ	१२७२९ ,,
७.	कौसरनाग	१२०२६ ,,
८.	त्रागबल	१२००० ,,
९.	शेषनाग	११७३० ,,
१०.	गङ्गाबल	११७१४ ,,
११.	लेह	११३०० ,,
१२.	खिलनमर्ग	९५०० ,,
१३.	बनिहाल	८९८५ ,,
१४.	सोनमर्ग	८७५० ,,
१५.	गुलमर्ग	८७०० ,,
१६.	पहलगाँव	७००० ,,
१७.	वेरीनाग	६१०० ,,
१८.	श्रीनगर	५२१४ ,,

कश्मीरी फलों का मौसम

स्टाबेरी, तूत, गिलास	मई
हरे बादाम, खुबानी	जून
कच्चे सेब, हरे बादाम, प्लम,	जुलाई
आड़ू, खुबानी, नाशपाती	"
सेब, बादाम, आड़ू, नाशपाती	अगस्त
अंगूर, अनार, हरे अखरोट	"
सेब, अंगूर अनार, नाशपाती	सितम्बर
नाशपाती, सेब	नवम्बर

नोट—कश्मीर घाटी की यात्रा जब कभी भी की जाय, हमेशा ओढ़ने तथा पहनने योग्य गर्म कपड़ों से पूरी तरह लैस होकर ही जाना चाहिये क्योंकि विभिन्न स्थानों की ऊँचाई अलग-अलग होने के कारण हर मौसम में तेज ठंड का मुकाबला हो सकता है।

नैनीताल की झाँकी

अक्टूबर का प्रारम्भ। बरसात बीत चुकी, इसलिये आकाश निर्मल था। और मैं अनुभव कर रहा था कि पहाड़ मुझे बुला रहे हैं। यों तो पिछले साल कश्मीर यात्रा के दृश्य अभी भी धुँधले नहीं पड़े थे। जैसे श्रीनगर में बंड के किनारे घूमना या डल झील-में कमल पुष्पों के नीच शिकारों पर सैर करना, किनारों पर हंसों के समान हाउसबोटों की कतार, निशात या शालामार बाग में पक्षियों की चहचाहट या फूलों की मुस्कुराहट या झरनों की खिल खिलाहट। गुलमर्ग, खिलनमर्ग या अलपत्थर से हरमुख एवं नंगा पर्वत के दर्शन करते हुए बर्फ पर दौड़ लगाना अथवा पहलगाँव के सुरम्य प्राकृतिक दृश्यों के मध्य लिद्दर के पत्थरों से टकराने की संगीतमय गूँज, सभी कुछ एकदम अनोखा था अवर्णनीय। सोते-जागते, उठते-बैठते, सदा मुझे ऐसा महसूस होता मानो एक अदृश्य शक्ति मुझे अपनी ओर खींच रही है, बुला रही है। और मैंने अनुभव किया है कि जिसे एकबार पहाड़ों की गोद में अठखेलियाँ करने का मौका मिल चुका है वह बार-बार प्रकृति के उस निर्दोष यौवन के रसपान से अपने को वंचित नहीं रख

सकता। मन बेतहाशा दौड़ पड़ता है उस नैसर्गिक हवा को चूमने के लिये पागल होकर। परन्तु परिस्थितियाँ ही कुछ ऐसी थीं कि मैं कश्मीर नहीं जा पाया था इसबार। इसी असमंजस में एक-ब-एक नैनीताल का प्रोग्राम बन गया। क्योंकि मेरा मित्र एवं बहनोई शिवपूजन साथ देने को तैयार हो गया। मैंने भी सोचा कि नैनीताल एक नई जगह है इसलिये तुरत तैयार हो गया।

रात में साढ़े आठ बजे हम आगरा फोर्ट स्टेशन से छोटी लाइन की गाड़ी में सवार हो गये। स्थान की दिक्कत न होने के कारण ऊपर की सीट पर बिस्तरे फैलाकर लेट रहे। सारी रात यात्रा जारी रही। सबेरे सात के करीब बरेली पहुँचे। और साढ़े दस बजे हमने अपने को काठगोदाम (१६६१ फीट) में पाया। साफ-सुथरा स्टेशन, हर प्रकार की सुविधा। यहाँ से नैनीताल बाइस मील है। उत्तर प्रदेश रोडवेज की बसे दौड़ लगाती रहती हैं। टिकट लेकर सामान ऊपर चढ़वाया। आध घंटे बाद बस प्रस्थान कर गई। यात्रियों में अधिकतर बम्बई की ओर के लोग थे। जिनमे कुछ पारसी अथवा गोआनीज भी थे। कुछ उत्तर प्रदेश अथवा देहली के थे। काठगोदाम छोड़ते ही ऊँचा-नीचा घुमावदार पहाड़ी रास्ता प्रारंभ हो गया। कभी बस दाहिनी ओर हिचकोले खाती कभी बाईं ओर। मोड़ इतनी जल्दी-जल्दी आते कि कुछ ही गज के फासले की चीज दिखाई न देती। मैंने अनुभव किया कि पठानकोट-श्रीनगर रोड से यहाँ की चढ़ाई अधिक चक्करदार है।

दाहिनी ओर एक पहाड़ी नदी सड़क के साथ-साथ बहती है जिसका पत्थरों से खिलवाड़ करते हुए आगे बढ़ना मन को बरबस मोह लेता है। रास्ते के बगल में चीड़, देवदार एवं अन्य पहाड़ी वृक्षों के भरपूर जंगलों की छटा भी देखने योग्य है परंतु इन सभी चीजों से अधिक हृदय को प्रफुल्लित करने का श्रेय भीनी-भीनी सुगंधमय पहाड़ी हवा को है, जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता। वह तो केवल अनुभव की ही वस्तु है।

बस तेजी से बढ़ी जा रही थी। वाकई बस चालक की योग्यता पर हैरान रह जाना पड़ता है। उसकी उँगलियों के इशारों पर सभी यात्रिओं का जीवन नाच रहा था। परन्तु हमें भी उसपर पूरा भरोसा था। करीब आधा रास्ता पार कर बस ज्योली कोट पहुंची। यह स्थान समुद्र तल से ४००० फीट की ऊँचाई पर है। बस स्टैंड पर ही एक बोर्ड लगा था। (SLIP OVER WARM JERSEY) सचमुच हवा में सिहरन महसूस होने लगी और यात्रियों ने कुछ गर्म कपड़े बदन पर डाल लिये। अमरूद और माल्टा बेचने वालों ने बस को चारो ओर से घेर लिया। मैंने भी कुछ माल्टे लिये। लोगों का विचार है कि माल्टे का रस पहाड़ों पर बस में यात्रा से उत्पन्न घुमड़ी और कै करने की इच्छा को रोकती है। यद्यपि अभी नैनीताल दस मील से भी अधिक दूर था परन्तु नगर का निचला भाग यहीं से दिखाई देने लगता है। बस चल पड़ी। फिर वही प्राकृतिक दृश्य हृदय पटल पर अंकित होने लगे। काठ-गोदाम छोड़ने के

करीब डेढ़ घंटे बाद हमारी बस नैनीताल झील के किनारे तल्ली-ताल के बस स्टैंड पर जा लगी। चारों ओर ऊँचे पहाड़ों के बीच में स्थित झील नवयुवती की माँग में सिंदूर के समान शोभायमान हो रही थी। नेत्र अनायास ही टंगे रहे जाते हैं इस अनुपम दृश्य को देखकर। बस के रुकते ही कुलियों ने धावा बोल दिया। सभी अपने-अपने टिकट यात्रियों के हाथों में पकड़ाने के लिये बेचैन थे। खैर, हम भी नीचे उतरे। सामान उतरवाया। हमें आगरे में ही मित्रों ने साह जी की धर्मशाला का पता बता दिया था, जो कि बस स्टैंड से करीब दो फलांग पर ही है और उसकी काफी प्रसंशा भी की थी। इसलिये हमने यही तय पाया कि पहले धर्मशाला ही चला जाय। यदि वहाँ जगह न मिली तो होटल की शरण ली जायगी। परन्तु हमें वहाँ स्थान प्राप्त हो गया। अपना सामान वहीं पटककर हम तुरन्त घूमने निकल पड़े। पहले तो एक पंजाबी होटल में जाकर तंदूर की रोटियों से पेट पूजा की। उसके बाद तल्लीताल के बस स्टैंड पर पहुँचे। यहाँ पर नैनीताल के बारे में कुछ जानने योग्य बातें बता देना जरूरी है।

इसका नाम नैनीताल इसलिये पड़ा क्योंकि यह स्थान इसी नाम की एक झील के चारों ओर बसा हुआ है। झील के उत्तरी छोर के कोने पर नैनादेवी का मंदिर भी अवस्थित है। यह झील समुद्रतल से ६३५० फीट की ऊँचाई पर है। इसकी लंबाई १५०० गज, चौड़ाई ५०० गज तथा अधिकतम गहराई ५००

फीट है। चारो ओर हरे-भरे वृक्षों से लदे ऊँचे पहाड़ों के बीच-बीच में, आकाश में तारों के सामान छिटके हुए बंगले एक अजीब समां बाँध देते हैं। झील के चारो ओर वृक्षों की घनी छाया में नवयौवना वधु के सामान सिमटी, सिकुड़ी सी सड़क बहुत भली लगती है।

आम तौर से यह शहर तल्लीताल तथा मल्लीताल नामक दो भागों में विभक्त है, झील के दक्षिण की ओर का माग तल्लीताल कहलाता है। यहीं बसस्टैंड तथा पुराने ढंग का बाजार है यहाँ से जब हम दाहिने हाथ की सड़क से झील के किनारे-किनारे आगे बढ़ते हैं तो इस सड़क को माल रोड कहते हैं। यही यहाँ की मुख्य सड़क है। इधर झील के किनारे दो रास्ते हैं। एक घोड़े की सवारी करने वालों के लिये यथा दूसरा अन्य सवारियों या पैदल यात्रियों के लिये। झील के किनारे-किनारे विभिन्न पुष्पों की क्यारियाँ बनी हुई हैं। सड़क के एक किनारे मुख्य होटलों की की कतार तथा नये डिजाइन का बाजार है। यहाँ के होटल 'ए' और 'बी' श्रेणो में बँटे हैं। पश्चिमी तथा भारतीय, दोनों ही प्रकार के होटल मौजूद हैं। इस सड़क पर फोटोग्राफी, फर्नीचर कपड़ों, कश्मीरी वस्तुओं एवं अन्य सभी प्रकार की दुकानें हैं।

सड़क के अंत में तथा झील के उत्तरी किमारे का भाग मल्लीताल कहलाता है। यहीं पर सिनेमागृह तथा रेस्त्रां हैं। यात्रियों की सुविधा हेतु झील के किनारे मंडपाकार स्थान बने हैं। पास ही सटा हुआ फ्लैट है जहाँ हर प्रकार के खेल कूद की

व्यवस्था है। झील में बोटिंग एवं तैराकी का समुचित प्रबंध है। परन्तु सबसे अधिक मन लगने का साधन तो स्वयं देश तथा विदेश से यहाँ आने वाले यात्री ही हैं। तरह-तरह की वेशभूषा, संस्कृति, रहन-सहन एवं भाषा के इस मधुर संगम में नहाकर किसका मन प्रफुल्लित न हो उठेगा। जहाँ तक मेरा व्यक्तिगत प्रश्न है, प्रकृति के जड़ रूप की अपेक्षा मैंने मानवरूपी इस चेतन-रूप का अध्ययन करने में ही अधिक रस पाया है। और जहाँ जड़ एवं चेतन दोनों ही रूपों का सागर लहरा रहा हो वहाँ तो भला मेरी प्रसन्नता का पूछना ही क्या। इधर ही फलों तथा तरकारियों का बाजार भी है।

यों तो देश में बहुत से हिल-स्टेशन हैं जहाँ ऊपर लिखी बातें पाई जा सकती हैं, परन्तु इस स्थान के सौंदर्य में चार चाँद लगाने का एकमात्र श्रेय इस झील को ही है। इसकी मनमोहक छटा का जितना भी वर्णन किया जाय, थोड़ा ही होगा। कुछ देर तक झील के किनारे खड़े रहने के बाद हम डोंगियों द्वारा जल के वक्षस्थल पर फिसलने का लोभ संवरण न कर सके। तुरत एक नाव पर जा बैठे। डोंगीचालक ने डाड़ों को गति दी और साथ ही साथ हम भी सरकने लगे—किनारों से दूर। झील में सफेद तथा भूरे बत्तखों के झुंड परों को फड़फड़ाते हुए तैर रहे थे। नीले जल पर हंसों की कतार मोतियों की माला सरीखी लग रही थी। उस समय अचानक मुझे श्रीनगर में डल झील पर शिकारों की सैर याद आ गई। और ऐसा लगा मानो मैं श्रीनगर

में ही हूँ। परन्तु कुछ ही क्षणों बाद मुझे यह अनुभव होने लगा जैसे नैनीताल तो श्रीनगर से कहीं अधिक सुन्दर है। कारण यह कि श्रीनगर एक चौरस मैदान में बसा हुआ है और अन्य बातों में देश के अन्य नगरों जैसा ही लगता है। स्वयं श्रीनगर में कोई खासियत नहीं, और हिल स्टेशन जैसा तो वहाँ कुछ भी नहीं है। पहाड़ों की कतारें भी वहाँ से काफी दूर हैं। परन्तु नैनीताल पहाड़ों की गोद में ठीक वैसे ही मुस्कुराता है जैसे यशोदा की गोद में अबोध, किन्तु भोले-भाले नवजात शिशु कृष्ण का सुन्दर बाल—रूप। कुछ क्षणों के लिये तो मैं एकदम आत्मविभोर हो गया, अपने आप ही में खो गया। दीन दुनियाँ की तनिक भी खबर न रही। जीवन में ऐसे ही क्षणों को मैंने सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण एवं मूल्यवान माना है; जबकि हृदय का प्रकृति से समन्वय हो जाता है और मनुष्य अपना अस्तित्व तक भूल बैठता है। यही वह सुख है, जिसकी खोज में मैं प्रतिवर्ष सैकड़ों मील का सफर करके और समय तथा पैसे खर्च करके प्रकृति की गोद में दो क्षण बिताने के लिए बेचैन रहता हूँ, बेताब हो उठता हूँ।

सूर्य पहाड़ों के पीछे छिपने जा रहा था। उसकी स्वर्णिम रश्मियाँ झील के वक्षस्थल पर अठखेलियाँ करती हुई लहरों का चुम्बन लेने में व्यस्त थीं। कुछ देर बाद प्रकृति का यह हास-परिहास समाप्त हो गया। रात ने अपनी काली चादर में वातावरण को समेट लिया। परन्तु विश्व का यह एक चिरंतन सत्य है कि मानव ने कभी भी अपनी हार स्वीकार नहीं की है। एकबारगी ही चारों ओर बिजली के लट्टू जगमगा उठे। दूर-दूर ऊपर पहाड़ों

पर बंगलों में जगमगाते बिजली के बल्ब आकाश में छिटके तारों में हिलमिल गये। नाविक ने डाँड़ खेना कुछ देर के लिए बंद कर दिया। हमारी नाव मौन एवं स्थिर तपोमग्न योगी के समान झील के बीचोंबीच चुपचाप पड़ी थी। वहाँ से तल्लीताल, मल्लीताल, मालरोड तथा दूर-दूर तक पहाड़ों पर जगमगाते बिजली के रंगीन बल्बों की, थिरकते हुए जल पर पड़ने वाली प्रतिच्छाया का दृश्य अतीव सुन्दर दृष्टिगोचर हो रहा था। ठीक ऐसा लगता था जैसे रंग-बिरंगी चूड़ियों की लरें पानी में बहा दी गई हों। यहाँ तो मानो सदा दीवाली ही रहती है। ऐसा दृश्य मैंने डल झील पर शिकारों में सैर करते हुए भी नहीं देखा था। शायद इन्ही कारणों से नैनीताल मुझे सभी हिल-स्टेशनों में सुन्दरतम लगा। हमलोग नाव से तल्लीताल के किनारे उतर गये। काफी ठंड महसूस होने लगी। इसलिये खाना खाकर निवास-स्थान लौट आये। थकान काफी हो चुकी थी, इसलिये रजाई के साथ ही नींद ने हमें भी अपने आवरण में आबद्ध कर लिया।

हमलोग सवेरे ही सोकर उठे। नल का पानी बहुत ठंडा था। नित्य क्रिया से निवृत होकर सड़क पर निकल पड़े। अभी तो केवल सात ही बजे थे। सड़कें वीरान पड़ी थीं। हाँ! सफाई का कार्य प्रारम्भ हो चुका था। कोई भी यात्री यहाँ की नगर पालिका की प्रसंशा किये बिना नहीं रह सकता। सफाई का समुचित ध्यान रक्खा जाता है इतना ही नहीं वरन यात्रियों से भी अनुरोध किया जाता है कि नगर को स्वच्छ एवं सुन्दर रखने में सहयोग दें; जिसके हेतु स्थान-स्थान पर बोर्ड लगे हैं। थोड़ी-थोड़ी

दूर पर स्वच्छ पानी के नलों तथा स्त्री-पुरुषों के लिये मूत्रालयों का समुचित प्रबन्ध है। धीरे-धीरे चहल-पहल वापस लौटने लगी। रंग-बिरंगी पोशाकें पहने तरह-तरह के लोग सड़कों पर दिखा देने लगे।

सड़कों पर बोर्ड में नैनीताल का नक्शा बना हुआ है, जिसमें देखने योग्य सभी स्थान तथा उनकी ऊँचाई दिखाई गई है। अधिक जानकारी के लिये 'रिजनल टूरिस्ट ब्यूरो से सम्बन्ध स्थापित किया जा सकता है। इसकी शाखायें अल्मोड़ा, रानीखेत तथा काठगोदाम में भी हैं। इस संस्था की सहायता से अन्य स्थानों में रहने की व्यवस्था हो सकती है। घूमने योग्य स्थानों की जानकारी या रेल, सड़क और हवाई यातायातों में स्थान प्राप्त किया जा सकता है।

यहाँ तरह-तरह का मनोरंजन भी प्राप्त है। जिसके लिये क्लबों की व्यवस्था है। तैराकी और बोटिंग का नैनीताल झील में प्रबन्ध है। घुड़सवारी के लिये अच्छे घोड़े मिलते हैं। स्केटिंग के लिये रिंक थियेटर बना है। कैपिटल, अशोक और लक्ष्मी तीन-सिनेमागृह हैं जिनमें लक्ष्मी सिनेमास्कोप तथा विस्टाविजन युक्त है। मछली के शिकार के लिये नैनीताल, खुर्पाताल भीमताल और नौकुचिया ताल उपयुक्त स्थान है। यहाँ महासीर तथा मिरर-कार्प नामक स्वादिष्ट मछलियों की बहुतायत है। आसपास में बहुत से देखने योग्य सुन्दर स्थल है, जहाँ पैदल, घोड़ों या बस के द्वारा

यात्रा की जा सकती है, यों समीप ही में पिकनिक के लिये निम्नलिखित स्थान हैं :—

१. चीना पीक (८,५६८) फीट—साढ़ेतीन मील दूर

२. किलबरी (८३००) फीट—पाँच मील दूर

३. देवपट्टा (ऊँट की पीठ), (७,६६१) फीट—ढाई मील दूर

४. लड़िया कांटा (८,११४) फीट—साढ़े तीन मील दूर

५. स्नोव्यू (७,४५० फीट)—सवा मील दूर

६. टिफिन टाप (७,५२०) फीट – सवा दो मील दूर

७. लैंड्स एण्ड (६,६५०) फीट—सवा दो मील दूर

८. शेर का डण्डा (७.८६२फीट) – ढाई मील दूर, लड़िया काँटा के रास्ते में।

इन सभी स्थानों में पैदल या घोड़ों से जाया जा सकता है। परन्तु पैदल जाने में बहुत कष्ट होता है इसलिए घोड़ों से जाना ही श्रेयस्कर है तथा घुड़सवारी का आनंद भी मिलता है।

चीना पीक यहाँ की सबसे ऊँची चोटी है। इसलिये सबसे पहले वहीं चलने की ठानी। जैसे ही मल्लीताल के अड्डे पर पहुंच कि घोड़े वालों ने घेर ही तो लिया। मोल तोल शुरू हुआ। खैर, अन्त में हमलोग घोड़े लेकर रवाना हो गये। चोटी पर सफेद झंडा लहरा रहा था जो इस बात की ओर इंगित करता है कि हिम मंडित पर्वतों का दृश्य साफ है। चढ़ाई आरंभ हो गई यों तो मैं कश्मरी में भी घोड़ों की सवारी कर चुका था परन्तु यहाँ के घोड़े वहाँ की अपेक्षा कद्दावर और अच्छे हैं। फिर घोड़े पर बैठकर पहाड़ो पर चढ़ने का एक अपना ही आनन्द है।

पहले-पहल चढ़ने पर तो बड़ा भय लगता है मगर कुछ देर में भय काफूर हो जाता है। कारण यह कि घोड़े बहुत ही सीधे होते हैं। साथ ही उन्हें पहाड़ी रास्तों का भी विचित्र ज्ञान होता है। नाक के सीध में अपने आप ठीक रास्ते पर बढ़ते चले जायेंगे। औरतें, बच्चे, बूढ़े सभी आसानी से इनपर सवारी करते हैं। रेगिस्तान में जो महत्व ऊँटों का है वही पहाड़ों घोड़ों का है। परन्तु नारियों के लिये साड़ी पहनकर घोड़ों पर चढ़ना बहुत कठिन है। इस कार्य के हेतु सलवार या फुलपैंट ही ठीक है। हमने बहुत सी औरतों को देखा जिन्होंने से मर्दों की फुलपैंट पहन रक्खी थी। टेढ़े मेढ़े पथरीले रास्ते पर घोड़े बढ़े जा रहे थे। घने वृक्षों के बीच में यह पतला सा रास्ता ऐसा ही लगता था जैसे अजगर आराम से सो रहा है। रास्ते भर चीड़ देवदारू, सुरई तथा अंगुअखरोट के जंगल मिलते रहे। पास ही रंगबिरंगे मनमोहक जंगली पुष्पों की छटा देखते ही बनती थी। रास्ते के एक ओर ऊँचे पहाड़ तथा दूसरी ओर हजारों फीट गहरी खाई। नीचे देखने ही से दिल में भय उत्पन्न हो जाता था आधा रास्ता पार करने करने पर हिममंडित पर्वतों की झलक प्राप्त होने लगी। एक घटे से कुछ अधिक चढ़ाई पार करने पर हम चीना पीक पहुँच गये वहाँ से जो भव्य दृश्य दिखाई दिया उसकी तो कल्पना भी नहीं की थी। मैं तो एकटक मूक दृष्टि से उसे देखता ही रह गया। हिमालय की भव्यता के समक्ष हम स्वयं ही नतमस्तक हो गये। यही तो हैं हमारे राष्ट्र के मुकुट जिन्होने हमारी मर्यादा को सदा

से बनाये रक्खा है। हमारी संस्कृति की रक्षा की है। हमे जीवन दान दिया है। गङ्गा, यमुना और ब्रह्मपुत्र जैसी वरदान स्वरूपा नदियाँ प्रदान की हैं। दुश्मनों से सदा हमारी रक्षा की है। यदि हिमालय न होता तो आज भारत भी न होता। इन्हीं का ध्यान कर महाकवि.जयशंकर 'प्रसाद' की लेखनी से अनायास ही यह पंक्तियाँ फूट पड़ी होंगी :—

हिमाद्रि तुंग-शृंग से, प्रबुद्ध, शुद्ध, भारती।
स्वयं प्रभा समुज्ज्वला, स्वतंत्रता पुकारती॥

आज हमारी उसी स्वतंत्रता के सर्वश्रेष्ठ प्रहरी का अपहरण करने के लिये चीन वाले अपने खूनी पंजे दिखा रहे हैं। वहाँ के उस शीतल वातावरण में भी मेरा खून खौल उठा। रोम रोम में विद्युत शक्ति प्रवाहित हो गई। नहीं, ऐसा कभी भी नहीं हो सकता हम अपने इन पवित्र स्थलों की रक्षा के लिये शरीर के रक्त की अंतिम बूँद तक बहा देंगे। परन्तु जो भी इनकी ओर वक्र दृष्टि उठायेगा उसकी आँखे निकाल लेंगे। क्योंकि यह तो हमारी मर्यादा एवं जन्म-मरण का प्रश्न है। इतना ही नहीं, अनन्त काल से हमारे पूर्वज इनके चरणों की रज अपने मस्तक पर लेने के लिये कठिनतम परिश्रम सहकर भी यहाँ की यात्रा करते रहे हैं।

सामने दृष्टिगोचर होने वाले उन सभी पर्वतश्रेणियों का नक्शा वहाँ एक बोर्ड पर बना हुआ है, साथ में उनकी ऊँचाई भी दी हुई है। बायें हाथ से दहिनी हाथ की ओर नजर घुमाने पर सबसे पहले केदारनाथ (२२,७७०) फीट के दर्शन होते हैं।

पास ही बद्रीनाथ हैं। फिर थोड़ा दाहिनी ओर दृष्टि घुमाने पर नील कन्ठ (२१,६४०) फीट दृष्टिगोचर होते हैं। इसी प्रकार से लगातार कामेत (२५,४४७) फीट, त्रिशूल (२३,३६०) फीट, नन्दादेवी (२५,६४५) फीट, नन्द कोट (२२,५१०) फीट, पंचचूली (२१,६६०) फीट तथा (२२,१६२) फीट आदि चोटियों के भव्य दृश्य दिखाई देते हैं। चीना पीक के ऊपर ठहरने योग्य एक लकड़ी का कमरा बना हुआ है। वहीं पर दर्शकों की सुविधा के लिये एक दूरबीन लगी है जिसकी सहायता से सारा दृश्य बहुत समीप हो जाता है।

बर्फ से ढंकी इन पर्वत श्रेणियों पर सूर्य की स्वर्णिम रश्मियाँ सतरंगे इन्द्र धनुष की रचना कर देती हैं। इस अनमोल दृश्य को देखकर मैं अपने जीवन को धन्य-धन्य अनुभव कर रहा था। इन क्षणों की गणना शायद मैं अपने जीवन के सबसे सुखद क्षणों में करूँगा। काफी देर वहाँ के मनोहारी दृश्यों का नयन चषकों द्वारा पान कर मैं मदमत्त हो उठा। उस स्थान से हटने की इच्छा ही न होती थी। परन्तु अपने लंबे प्रोग्राम को ध्यान में रखते हुए वापस आना ही पड़ा। मन को मसोसकर घोंड़ों की पीठ पर बैठ गये तथा उन्हे रास्ते की ओर मोड़ दिया। उतराई शुरू हो गई। फिर भी पहाड़ और जंगलों के बीच से जब कभी भी पर्वतश्रेणियों की झलक मिल जाती, नेत्र उधर ही खिंच जाते अन्त में हम मल्लीताल पहुँच गये। एकबार मैंने पुनः सिर उठाकर चीना पीक की ओर देखा। सफेद झन्डा लहरा रहा था परन्तु समस्त अभूतपूर्व दृश्य पहाड़ों की ओट में अंतर्ध्यान हो

चुके थे। केवल उनकी एक मीठी याद बाकी रह गई थी, हृदय के अंतरतम में संजो रखने के लिये।

दूसरे दिन सवेरे ही मल्लीताल की ओर चल पड़े। घोड़े वाले से कल ही बातें तय हो चुकी थीं और वह बड़ी बेकरारी से इंतजार कर रहा था हमारा। क्योंकि इस बेकरारी से पेट का सवाल चिपका हुआ था। इसलिये इस इंतजार में बेचैनी भी अधिक थी। पैसे की बेकरारी इश्क में पाई जाने वाली बेकरारी से अधिक तीव्र होती है ऐसा मेरा अपना विचार है। कारण यह कि पेट का सवाल दुनिया का सबसे अहम सवाल है। और वह भी उनलोगों के लिये जो कि मेहनत मजदूरी करने के बाद भी हद से ज्यादा गरीब हैं। हम यह जानते थे कि पहुँचने में देर होती देखकर घोड़े वाले के मन में तरह-तरह की शंकायें उठ रही होंगी। वह सोच रहा होगा कि कहीं हमें किसी दूसरे घोड़ेवाले ने फाँस तो नहीं लिया। कल रास्ते भर वह अपने साथियों को गालियाँ देता आया था। बात-बात में वह यही कहता कि हुजूर यह घोड़ेवाले बहुत बदज़ात होते हैं, इनमें एका नाम की तो कोई चीज ही नहीं है। सरकार ने हर जगह के लिये घुड़सवारी का रेट बाँध दिया है। मगर यह कमबख्त अपनी आदत से भला क्यों बाज आने लगे। जब आपसे कहीं अकेले में बातें करेंगे तो बाजार भाव देखकर रेट कम कर देंगे। गर्मियों में जब सवारियाँ अधिक और घोड़े कम रहते हैं तो मनचाहा रेट लेते हैं और आजकल जब सवारियाँ घट गई हैं तो रेट से भी कम लेने को तैयार हो जाते हैं।

और जब एक घोड़े वाला रेट से कम लेने को तैयार हो जाता है तो दूसरों को भी कम करना पड़ता है। हाँला कि इस बात को लेकर सभी एक दूसरे को गालियाँ देते हैं मगर वक्त आने पर खुद भी वही गलती कर बैठते हैं। और अंत में वह दार्शनिक की भांति बड़ी गंभीर आवाज में यह कहकर अपना लेक्चर समाप्त करता कि हुजूर यह पापी पेट ही सब कुछ कराता है इसमें घोड़े वालों का भी क्या कसूर। यह तो पेट का सवाल है जो कि इन्सान को हैवान बनने पर मजबूर कर देता है। हमें भी उसकी हाँ में हाँ मिलानी पड़ती क्योंकि बात एकदम सच थी।

मल्लीताल पहुँचने तक रास्ते में बहुत से घोड़े वालों ने हमें फंसाने के लिये अपने जाल फेंके। किसी ने अपने घोड़े की बड़ाई की तो दूसरे ने एक रुपया कम पर ले चलने का लालच दिया। मगर हम भी वादे पर अटल बने रहे और सीधे मल्लीताल पहुंच कर ही रुके। वाकई घोड़े वाला बहुत बकरारी से हमारा इंतजार कर रहा था। हमें देखते ही वह दस कदम आगे बढ़ आया और बड़े तपाक से झुक कर फर्शी सलामी दी। उसकी आँखो में एक अजीब शुक्रिया का भाव मैंने देखा 'जिनमें बेबसी अधिक थी। अचानक मानो दिव्य दृष्टि से मुझे दिखाई दिया कि केवल वह घोड़े वाला ही नहीं वरन् सैकड़ों मील दूर किसी गाँव में उसकी बीबी जिसके कपड़े गरीबी से फटकर तार-तार हो गये हैं तथा पाँच छोटे-छोटे बच्चे जिनके बदन पर ढंग का कपड़ा भी नहीं है और भूख से पेट सट गया है, उन्ही बेबस नजरों से हमारी

और देख रहे हैं क्योंकि यह तो उन सभी के पेट का सवाल था न। एकाएक मेरी नजरें घोड़ों की ओर अनायास घूम गईं और उनकी खामोश नजरों में भी मैंने वही बेबसी और शुक्रिया का भाव देखा। शायद वह भी दुआयें दे रहे थे कि हुजूर आपने आज के लिये हमारे पेट का सवाल हल कर दिया खुदा आपको सलामत रक्खे।

खैर, घोड़ों पर सवार होकर हम बढ़ चले। पहले तो हमने फलों का बाजार पार किया। तरह-तरह के पहाड़ी फलों का अंबार लगा था जिसे देखकर जीभ में पानी भर आना लाजिमी है। फिर होटलों और बंगलों की कतारें पार करते हुए ऊपर की ओर बढ़े। आज हमारा लक्ष्य लैंड्स एन्ड तथा टिफिन टाप था। फिर रास्ते में हमें उत्तर-प्रदेश सरकार के ग्रीष्मकालीन सचिवालय की भव्य इमारत मिली। धीरे-धीरे हम पथरीले रास्तों पर बढ़ते गये। नीचे दूर-दूर तक, बगीचे में रंग-बिरंगे फूलों के समान बिखरी हुई, इमारतों का दृश्य बहुत ही मनमोहक लग रहा था। फिर घने वृक्षों का मार्ग प्रारंभ हो गया। थोड़ी देर बाद हमलोग लैन्ड्स एन्ड पहुँच गये। यहाँ का दृश्य भी निराला है। इस स्थान को लैंड्स एन्ड इसलिये कहते हैं क्योंकि यहाँ पर पहाड़ों का सिलसिला समाप्त हो जाता है तथा बहुत नीचे दूर-दूर तक समतल मैदान और तराई का दृश्य देखने को मिलता है। पहाड़ी के ठीक नीचे खुर्पाताल है जो कि एक छोटी सी झील है।

लैंड्स एन्ड पर थोड़ी देर ठहरकर हमलोग टिफिन टाप की ओर बढ़े। चढ़ाई बढ़ने लगी तथा जंगल भी घने हो गये। रास्ता भी काफी संकरा हो गया। मगर वाहरे घोड़े, यहाँ इनकी पीठ पर बैठकर, बिना किसी चिंता के वैतरणी भी पार की जा सकती है। टिफिन टाप की चोटी दूर से ही दिखाई दे रही थी। आश्चर्य होता था कि हमलोग इतनी दूर कैसे चढ़ पायेंगे। परन्तु कुछ देर बाद हमलोग वहाँ पहुँच ही तो गये। घोड़ों को कुछ नीचे ही छोड़कर हमलोग चोटी के ऊपर पहुँचे। यहाँ बैठने के लिए एक गोलाकार लकड़ी का आसन बना हुआ है। इस स्थान से दिखाई देने वाले दृश्य की कल्पना ही हृदय को आनंद विभोर कर देती है। यहाँ से सब कुछ लग रहा था अनोखा, अभूतपूर्व। चीना पीक से दिखाई देने वाले दृश्यों का काफी भाग यहाँ से भी दिखाई दे रहा था, मगर साथ-ही साथ नैनीताल झील एवं नगर का सम्पूर्ण तथा सम्मिलित दृश्य तो सौंदर्य की पराकाष्ठा को पार कर गया। उफ, जब मानव की कार्यक्षमता का प्रकृति से समन्वय हो जाय तो भला फिर क्या पूछना। वह देखिये, नीचे झील के वक्षस्थल पर तिरती नौकायें जिनपर सफेद रंग के पाल हवा में फड़फड़ा रहे हैं, मानसरोवर में राजहंसों के कुलेल करने की छटा उपस्थित कर रहे हैं। झील के दोनों ओर सिमटी हुई सड़क जैसे प्रियतम की प्रतीक्षा में बाहें फैलाये दीख रही है। पहाड़ों पर फैले हुए हरे भरे वृक्षों के मध्य झाँकते हुए रंग-बिरंगे मकानों की कतारें नन्दन कानन में छिटकी हुई पुष्प वीथियों का समाँ बाँध रही हैं। वाहरे

नैनीताल, तू धन्य है और धन्य है तेरा सौंदर्य। इच्छा होती थी कि इस सम्पूर्ण छवि को अपने नेत्र चषकों के सहारे हृदय में उड़ेल डालूँ।

बहुत देर तक हम बैठे रहे मूक, स्थिर। वहाँ से टलने की इच्छा ही न होती थी। इसी असमंजस में काफी देर हो गई। भगवान भास्कर सिर पर चढ़ आये। सतरंगी किरणों में नहाकर शैल शिखर भी बहुरंगे हो उठे। इधर भूख भी हमलोगों को सताने लगी। अब कोई चारा न रहा। उस स्वर्गीय दृश्य को हृदय से नमस्कार कर चोटी से नीचे उतरे। घोड़े वाला जमीन पर ही खर्राटे भर रहा था और घोड़े जंगली घास पर मुँह मारने में मगन थे। हमने उसे जगाया। वह भी आँखें मलता हड़बड़ाकर उठ बैठा। फिर बोला, हुजूर बहुत देर हो गई, अब चलना चाहिये। हमलोग घोड़ों पर सवार होकर चल पड़े। अभी तक तो ऊपर चढ़ते आये थे मगर अब केवल ढलान थी। चढ़ने की अपेक्षा घोड़े पर बैठकर ढाल पर उतरना अधिक कष्टदायक होता है। फिर भी हमलोग अबतक काफी अभ्यस्त हो चुके थे। साथ साथ घोड़े वाले की रसीली बातों ने हमारा कष्ट भुला दिया उसके पास अनुभवों का खजाना था।

वह रहने वाला रामपुर स्टेट के एक गाँव का था। सत्रह साल की उम्र से ही घोड़े लेकर हर गर्मी में नैनीताल आता रहा था और आज वह चालीस साल का था। उसने इन ऊँचे नीचे पहाड़ों पर ही जिंदगी के बहुत सारे उतार-चढ़ाव देखे थे। उसके

मुँह पर बेतरतीब उगी हुई अधपकी दाढ़ी और झुर्रीं पड़े गालों को भेदकर मेरी दृष्टि के समक्ष एक सत्रह साल के नवयुवक का चेहरा घूम गया। जिसकी नसों में जवानी का गर्म खून दौड़ रहा हो। अभी तो केवल उसकी मसें भींगी हैं और जीवन में भविष्य के प्रति एक नवीन उल्लास तथा उत्साह के साथ वह हाथ में एक छड़ी लिये घोड़े के पीछे दौड़ा आ रहा है। परन्तु नहीं, वह तो केवल कल्पना थी। भूत के अंधकारमय गर्भ में खोया हुआ एक धूमिल सपना। सब कुछ विलीन हो चुका था। अब तो केवल वास्तविकता मेरे सामने थी, हसन खाँ के झुर्री-दार अस्थिपंजर के रूप में। लगातार तेइस सालों से इन पथरीली चट्टानों को रौंदते रहने के कारण उसके पैर कमजोर हो चुके थे। जमाने की चोटों ने कमर झुका दी थी। मगर बाहरी भूख की आग, जिसके सहारे वह अभी तक चल रहा था, जल रहा था उसी लौ के समान जो दिये में तेल समाप्त हो जाने पर भी जलते रहने के प्रयास में लीन हो। रह-रहकर उसे खाँसी आती। घोड़ों की चाल तनिक तेज हो जाने पर उसका साथ छूट जाता और तेज चलने के कारण वह हाँफने लगता।

अब तक हमलोग राजभवन के समीप पहुँच चुके थे। वहाँ पहुँचकर उसकी स्मृति को एक झटका सा लगा। न जाने कितनी बिखरी हुई यादें उसके दिमाग में सिमट आईं। वह बोल उठा, हुजूर अंग्रेजों का भी एक जमाना था। क्या शान थी उस वक्त नैनीताल की। यहाँ इस मौसम में हिन्दुस्तानी तो इक्के-दुक्के ही

नजर आते थे और वह भी जो बहुत ही रईस किस्म के लोग थे, से राजे, महाराजे, जमींदार वगैरह। हमलोगों को भी मुँह मांगी मुराद मिलती थी। वह लोग मौज में आने पर बढ़िया किस्म की अंग्रेजी शराब की बोतलें भी बख्शीश में दे डालते थे। आपसे क्या छिपाना हुजूर। जिंदगी के ऐसे-ऐसे लुत्फ अगर हमने खुद उठाये नहीं तो कम-से-कम इन नाचीज आँखों देखे तो जरूर हैं जो शायद अब इस जिंदगी में कभी भी देखने को नहीं मिलेंगे। अब तो सिर्फ याद रह गई है उस जमाने की। असलियत तो सात समुन्दर पार वापस चली गई सरकार। मैंने देखा कि कृतज्ञता के उस भाव ने उसकी आँखें आज भी नम कर दीं।

राजभवन को देखकर वह बोला—हुजूर, इस रास्ते पर किसी को भी चलने की इजाजत नहीं थी। खास-खास लोग ही इधर आ सकते थे। मगर हमलोगों को इन घोड़ों की बदौलत हर जगह आने-जाने की छूट थी। क्योंकि बड़े-बड़े अंग्रेज साहब लोग और उनकी खूबसूरत मेंमें घोड़ों की सवारी में खूब दिलचस्पी लेते थे। हुजूर, मेंमें भी क्या खूब थीं। देखने में कितनी नाजुक मगर भीतर से कितनी बहादुर। साहबों से घोड़ा दौड़ाने में जरा भी कम रह जायें तो बात। डर तो उन्हें छू भी नहीं गया था। और एक हमारे मुल्क की औरतें हैं जो घुड़सवारी से ऐसा घबराती हैं कि उनकी घबराहट देखकर बेचारे घोड़े भी शर्म से आँखे चुराने लगते हैं। सच कहता हूँ हुजूर, मैं इन घोड़ों के दिल में

उठने वाले ख्यालों को अच्छी तरह से पहचानता हूँ। इतना कह-कर वह खुद भी खीसें निपोर कर घोड़े की तरह हिनहिनाने लगा। हमलोग भी रास्ते भर उसकी दिलचस्प बातों का रस लूटते रहे, हँसते रहे।

इसी बीच तल्ली-ताल का बस स्टैंड आ गया। हम घोड़ों से उतर पड़े। जितने पैसे तय थे उतने उसे दे दिये। मगर बख्शीश के लिये उसने जिद पकड़ ली। कहने लगा, हुजूर यह पैसे तो घोड़े के मालिक को चले जायेंगे। हमलोगों को तो सिर्फ बख्शीश का ही सहारा है वरन् दोनों शाम की रोटी चलनी भी मुश्किल हो जाय। फिर घर पर जोरू है, बाल-बच्चे हैं। कम-से कम उनका तो ख्याल कीजिये। आपके पीछे-पीछे मीलों तक पैदल पहाड़ों की खाक छानी है, पत्थरों की ठोकरें खाई हैं। आप माई-बाप हैं, खुदा आपको सलामत रक्खे। उसकी द्रवित नजरों से मेरा दिल भी पसीज गया। मैंने एक रुपये का नोट जेब से निकालकर उसके हाथ पर धर दिया। फिर तो उसकी बाछें खिल गईं। तहेदिल से शुक्रिया अदा करते हुए उसने ऐसी अदा के साथ फर्शी सलामी दी कि मेरी भी तबीयत बाग-बाग हो उठी। कुछ क्षणों के लिये तो लखनऊ की नवाबी का जमाना आँखों के सामने नाच उठा। ऐसा महसूस हुआ जैसे कि मैं भी कोई बिगड़ा हुआ नवाब ही हूँ।

नैनीताल स्वयं तो सुंदर है ही; परन्तु आस-पास के निम्न-लिखित स्थान भी देखने योग्य हैं।

नैनीताल	से खुर्पाताल	दूरी	३	मील
,,	,, भवाली	,,	७	,,
,,	,, भीमताल	,,	१४	,,
भवाली	,, सातताल	,,	६	,,

भीमताल से नौकुचिया ताल		,,	२.५	,,
भवाली	,, रामगढ़	,,	६	,,
रामगढ़	,, मुक्तेश्वर	,,	१६	,,
नैनीताल	,, रानीखेत	,,	३७	,,
,,	,, अल्मोड़ा	,,	४४	,,

उत्तर प्रदेश राज्य परिवहन की आरामदेह बसें सभी स्थानों के लिये उपलब्ध हैं।

खुर्पाताल के दर्शन तो हम लैंड्स एन्ड से कर ही चुके थे। हाँ ! भीमताल का नाम बहुत सुन रखा था इसलिये वहीं चलने की ठानी। बस तैयार खड़ी थी। टिकट लेकर उसमें चढ़ गये। कुछ देर बाद बस रवाना हुई। यात्रियों में कुछ लोग तो हम जैसे पर्यटक थे वर्ना अधिक स्थानीय देहातों के लोग थे। इस यात्रा में हमें इधर के गाँवों तथा यहाँ के रहने वाले लोगों के रहन-सहन, भाषा एवं संस्कृति के बारे में काफी जानकारी प्राप्त करने का मौका मिला। रास्ते भर वही चीड़, देवदारू आदि के दर्शन तथा ऊँचे-नीचे, हरे–भरे पहाड़ों के मनमोहक दृश्य हमारे तन मन की क्लांति को हरते रहे। बीच में कुछ देर के लिये बस भवाली में रुकी। यहीं एक ऊँचे स्थान पर भारत का सर्व प्रसिद्ध टी० बी० सेनेटोरियम है। वहाँ से चलकर हमलोग भीमताल पहुँच गये। बस झील के किनारे जाकर खड़ी हो गई। सभी यात्री उतर पड़े।

वाकई झील का दृश्य बहुत सुन्दर है। इसके चारों ओर सड़क बनी है। मगर इसकी वास्तविक सुन्दरता झील के मध्य में स्थित टापू के कारण है जो कि वृक्षों से ढंका है। डोंगी पर चढ़ कर टापू पर पहुँच गये। वहाँ की मस्त हवा एवं वृक्षों की शीतल छाया ने मन को बेकाबू कर दिया। आंतरिक आनन्द से मन नाच

उठा। इस समय मुझे कश्मीर में डल झील के बीच में स्थित "चार चिनार" का दृश्य याद आ गया। यहाँ भी ठीक वैसा ही लगता है। यों भीमताल क्षेत्रफल में भी नैनीताल से बड़ा है। बहुत देर तक वहाँ बैठकर प्रकृति के सौंदर्य का रसपान करते रहे। भूख जोरों की लग आई थी इसलिये रास्ते में खरीदे हुए पहाड़ी फलों पर भी हाथ साफ करते गये। काफी देर हो गई। शाम का धुंधलका ऊँचे पहाड़ों से सरक कर नीचे की ओर छाने लगा। उधर बस का ड्राइवर भी हार्न बजाने लगा तो मजबूर होकर हमें लौटना पड़ा। रात नैनीतालमें बितानी थी, अतः वापस लौट आये।

यूं तमन्ना तो बहुत थी कि कुछ दिन और रुककर रानीखेत, अल्मोड़ा आदि स्थानों की भी सैर की जाये मगर समय की कमी ने हमे मजबूर कर दिया। क्योंकि मजबूरी का ही दूसरा नाम शुक्रिया है इसलिये नैनीताल को शुक्रिया अदा करते हुए हम दूसरे दिन डेढ़ बजे नैनीताल से प्रस्थान कर गये।

रास्ते में वही पूर्व परिचित दृश्य मिलते रहे मगर जो खुशी नैनीताल जाने के समय महसूस हो रही थी उसका स्थान विछोह के दुख ने ले लिया था। मन के इसी उहापोह में हम काठगोदाम पहुँच गये। बस से उतरते ही मैंने पीछे छूटे हुए पहाड़ों पर नजर डाली। मगर यहाँ तो दुनिया ही बदल चुकी थी। ऐसा ज्ञात हुआ मानो सब कुछ स्वप्न था, केवल स्वप्न। जिन्हें इन ऊँचे गगनभेदी पहाड़ों ने अपनी ओट में छिपा लिया था। और मैं उसी सुनहले सपने से प्रभावित चुपचाप खड़ा था, मूक, बेबस।

★